



राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान जमशेदपुर



# मंथन २०२४

१३वां संस्करण



पद्म भूषण, पद्म विभूषण श्री रतन टाटा जी को भावपूर्ण श्रद्धांजलि।

# निदेशक की कलम से ...



**"कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।  
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि॥"**

(भगवद्गीता २ .४७)

(कर्तव्य-कर्म करने में ही तेरा अधिकार है, फलों में कभी नहीं। अतः तू कर्मफल का हेतु भी मत बन और तेरी अकर्मण्यता में भी आसक्ति न हो। - स्वामी रामसुखदास द्वारा हिंदी अनुवाद)

इसी सनातन ज्ञान को आत्मसात करते हुए, जब मैं इस प्रतिष्ठित संस्था के शीर्ष पर आपसे संबोधित करता हूँ, मैं भविष्य के लिए गहन आशावाद की भावना से भर जाता हूँ, जहाँ राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान जमशेदपुर ने व्यावसायिक मानकों के मानक पर लगातार ध्यान केंद्रित करके शैक्षणिक उत्कृष्टता के शिखर पर पहुंचने का प्रदर्शन किया है और समग्र विकास के प्रति अपनी प्रतिबद्धता में अडिग बना हुआ है। 'मंथन' के हर पन्ने में एक चित्रण है कि संस्थान ने नवाचार, रचनात्मकता, उद्यमिता, अनुसंधान और सामाजिक प्रभाव की खोज को एक समरसता में पनपने वाले माहौल को पोषित किया है, जो एक ऐसी पीढ़ी का पोषण कर रहा है जहाँ शैक्षणिक प्रतिभा और अडिग समर्पण एक-दूसरे के पूरक हैं।

मैं दृढ़ता से मानता हूँ कि एक सूक्ष्म लेकिन महत्वपूर्ण अंतर एक सराहनीय संस्था को सच्ची महानता तक पहुंचने वाली संस्था से अलग करता है। जैसा कि अल्बर्ट आइंस्टीन ने उपयुक्त रूप से कहा था, 'शिक्षा तथ्यों का ज्ञान नहीं है, बल्कि सोचने के लिए मन का प्रशिक्षण है।' यह दर्शन संस्थान द्वारा किए गए कार्यों का आधार है जहां प्रत्येक तत्व सामूहिक सफलता में योगदान देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह अत्यधिक निरंतर कड़ी मेहनत समाज के सतत विकास के लिए उत्कृष्टता और तेजी प्राप्त करने के उद्देश्य से है।

**"विद्या ददाति विनयं विनयाद्याति पात्रताम्। पात्रत्वाद्धनमाप्नोति धनाद्धर्मं ततः सुखम्॥"** (उपनिषद्)

अर्थात् विद्या से विनय प्राप्त होती है, विनयता से योग्यता आती है, योग्यता से धन मिलता है, धन से धर्म और धर्म से सुख की प्राप्ति होती है। शिक्षा में परिवर्तन की शक्ति निहित है। निर्दोष प्रणालियों और सामूहिक समर्थन में अडिग विश्वास के साथ, मैं दृढ़ता से मानता हूँ कि संस्थान समग्र तथा सतत विकास की हमारी निरंतर खोज में अनुकरणीय मानदंड स्थापित करना जारी रखेगा।

# उप निदेशक की कलम से ...



उप निदेशक के रूप में, मुझे अत्यधिक हर्ष हो रहा है क्योंकि हम राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान जमशेदपुर में एक और वर्ष की असाधारण उपलब्धियों और निरंतर प्रगति का उत्सव मना रहे हैं। पिछले वर्ष की ओर देखते हुए, अत्यंत संतोष का अनुभव होता है क्योंकि हम इस संस्थान की शैक्षणिक उत्कृष्टता और दृढ़ व्यावसायिक मानकों के प्रति उसकी प्रतिबद्धता के साक्षी हैं।

हमारे संस्थान ने पिछले वर्षों में जो प्रगति की है, वह वास्तव में प्रेरणादायक है। हमारी शैक्षिक प्रणाली ने न केवल ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में गहन अनुसंधान को प्रोत्साहित किया है, बल्कि समाज के विभिन्न क्षेत्रों में सकारात्मक योगदान देने के लिए भी प्रेरित किया है। जैसा कि कठोपनिषद् (1.3.14) में अंकित है, **"उत्तिष्ठ जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत"** अर्थात् उठो, जागो, और जानकार श्रेष्ठ पुरुषों के सान्निध्य में ज्ञान प्राप्त करो। हमें प्रगति के पथ पर निरंतर बढ़ते रहना चाहिए, न कि पीछे मुड़कर देखते रहना चाहिए। यह संस्थान हमेशा से ही शिक्षा के उच्चतम मानकों को बनाए रखने के लिए प्रतिबद्ध रहा है, और यह प्रतिबद्धता हमें नई ऊंचाइयों तक ले जा रही है।

यह पत्रिका स्वयं इस बात का प्रमाण है कि संस्थान की जीवंत समुदाय ने एक ऐसा वातावरण विकसित किया है जहां नवाचार, अनुसंधान और समाज पर प्रभाव एक सुंदर समन्वय में सह-अस्तित्व करते हैं। जैसा कि संत कबीरदास ने कहा है, **"ज्ञान गंगा बहाए, जो पिए सो तर जाए,"** यह दर्शाता है कि ज्ञान का प्रवाह हर किसी को उपलब्ध होना चाहिए और जो इसे प्राप्त करता है, वही सफल होता है। हमारे विद्यार्थियों और शोधकर्ताओं ने अपने-अपने क्षेत्रों में उत्कृष्टता प्राप्त की है। उनकी उपलब्धियों ने न केवल संस्थान की प्रतिष्ठा को और भी बढ़ाया है, बल्कि हमारे समाज और देश के विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उनके अनुसंधान और नवाचारों ने हमें गर्व से भर दिया है, और हमें विश्वास है कि भविष्य में ये योगदान और भी महत्वपूर्ण होंगे।

इस पूरे वर्ष के दौरान, हमने महत्वपूर्ण संभावनाओं को साकार होते देखा है, जिनमें से प्रत्येक हमारी संकाय, कर्मचारियों, छात्रों और पूर्व छात्रों के सामूहिक प्रयास और अडिग भावना का प्रमाण है। यह केवल हमारे शैक्षिक और शोध प्रयासों का परिणाम नहीं है, बल्कि हमारे संस्थान की उस संस्कृति का प्रमाण है, जो सहयोग, सम्मान और समर्पण पर आधारित है। **"अवसरवादी नहीं, अवसर-सृजनकारी बनो,"** यह उक्ति हमें याद दिलाती है कि हम अपने भाग्य के निर्माता स्वयं होते हैं। आने वाले समय में, हमारी योजना और भी बड़ी और साहसिक होगी। हम न केवल ज्ञान के मौजूदा क्षेत्रों में प्रगति करेंगे, बल्कि नई संभावनाओं का अन्वेषण भी करेंगे। हमारा उद्देश्य है कि हमारे छात्र न केवल अपने क्षेत्र में विशेषज्ञ बनें, बल्कि वे ऐसे नागरिक बनें जो समाज में सार्थक बदलाव ला सकें।

आगे की ओर देखते हुए, मैं आशा और साझा उद्देश्य की भावना से भरा हुआ हूँ। हमारे अद्वितीय समुदाय के अडिग समर्थन और उत्कृष्टता के प्रति हमारी दृढ़ प्रतिबद्धता के साथ, एनआईटी जमशेदपुर आने वाले वर्षों में और भी ऊंचाइयों तक पहुंचने के लिए तैयार है। हम ज्ञान की सीमाओं को आगे बढ़ाना, नवाचार को अपनाना और हमारे छात्रों को एक उज्ज्वल भविष्य के निर्माणकर्ता के रूप में सशक्त बनाना जारी रखेंगे। जैसा कि **महात्मा गांधी** ने कहा था, **"भविष्य इस बात पर निर्भर करता है कि आज हम क्या करते हैं,"** इसलिए हमें आज की मेहनत और संकल्प से ही अपने कल को उज्ज्वल बनाना है।

प्रो. राम विनय शर्मा

उप निदेशक

राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान जमशेदपुर

# मंथन समिति अध्यक्ष की कलम से ...



सर्वभूतस्थमात्मानं सर्वभूतानि चात्मनि।  
ईक्षते योगयुक्तात्मा सर्वत्र समदर्शनः॥

(भगवद्गीता ६.२९)

जो व्यक्ति योग के द्वारा संतुलित और एकाग्रचित्त हो जाता है, वह हर प्राणी में अपने आप को और अपने आप में हर प्राणी को देखता है। ऐसा व्यक्ति सच्चे अर्थों में समान दृष्टि वाला होता है। सृजनात्मकता और ज्ञान का सही अर्थ तब है जब हम समग्र दृष्टिकोण से चीजों को देखें और समाज के हर वर्ग को प्रेरित करें। 'मंथन' इसी भावना का प्रतीक है, जहाँ विविध विचारों और रचनाओं का संगम होता है, और यह पत्रिका एक समान दृष्टिकोण के माध्यम से पाठकों के लिए प्रेरणा और ज्ञान का स्रोत बनती है।

असीम, अपरिमित विश्वरूप के अनुग्रह, समिति के सहयोग एवं छात्रों के अविरल उद्यम से, मैं, 'मंथन' समिति की ओर से संस्थान की वार्षिक पत्रिका के 13वें संस्करण का अत्यंत आनंद के साथ स्वागत करती हूँ। यह पत्रिका केवल संस्थान के भीतर पनपती रचनात्मकता और विचारशीलता का प्रतीक ही नहीं, अपितु यह हमारे छात्रों और शिक्षकों के संयुक्त प्रयासों का वह संकल्प है, जो शब्दों, विचारों और अभिव्यक्तियों के माध्यम से हमारी सामूहिक चेतना को दर्शाता है। 'मंथन' हमेशा से संस्थान के मूल्यों, नवाचारों और परंपराओं का प्रतीक रहा है, और इस बार का संस्करण भी इसी परंपरा को सहेजते हुए नई ऊँचाइयों को छूने का प्रयास है।

इस संस्करण का महत्व इसलिए और भी बढ़ जाता है क्योंकि यह न केवल तकनीकी और साहित्यिक उत्कृष्टता का प्रतिबिंब है, बल्कि यह संस्थान की दूरदर्शी सोच और सृजनात्मक दृष्टिकोण को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाने का सशक्त माध्यम भी है। आज के युग में, जहाँ प्रत्येक क्षण नवाचार और प्रतिस्पर्धा की तीव्र धारा से परिपूर्ण है, 'मंथन' अपने पाठकों को केवल ज्ञानवर्धक सामग्री प्रदान करने तक सीमित नहीं रहता, बल्कि उनके विचारों को प्रज्वलित करने और उन्हें नवीन दिशाओं की ओर प्रेरित करने का भी पुनीत कार्य करता है। "वसुधैव कुटुम्बकम्" का भाव लेकर यह पत्रिका न केवल संस्थान के भीतर, बल्कि समाज में भी सकारात्मक बदलाव लाने का प्रयास करती है।

मैं विश्वास करती हूँ कि यह संस्करण पाठकों के लिए केवल ज्ञान और प्रेरणा का स्रोत नहीं होगा, बल्कि उनके अंतर्मन में नवचेतना का संचार भी करेगा। इसकी सामग्री न केवल गहन अध्ययन और शोध पर आधारित है, बल्कि साहित्यिक सौंदर्य और सामाजिक चेतना को भी समाहित करती है। इस पत्रिका के प्रत्येक पृष्ठ में छात्रों की कल्पनाओं, विचारों और सृजनशीलता की झलक है, जो इसे अद्वितीय बनाती है। मुझे विश्वास है कि 'मंथन' पाठकों के हृदय और मस्तिष्क दोनों को स्पर्श करेगा। यह संस्करण संस्थान की सृजनात्मक यात्रा का एक नया अध्याय है, जो न केवल पाठकों को प्रेरित करेगा, बल्कि उन्हें अपने विचारों को नये दृष्टिकोण से देखने का अवसर भी देगा। मैं 'मंथन' की इस यात्रा की सफलता के लिए शुभकामनाएँ प्रेषित करती हूँ और आशा करती हूँ कि यह पत्रिका संस्थान की गौरवशाली परंपरा को सशक्त बनाने में अपनी भूमिका निभाएगी।

डॉ. स्वाति सुधा  
अध्यक्षा, मंथन समिति  
राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान जमशेदपुर

# संपादिका की कलम से ...



**उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानमवसादयेत्।**

**आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मनः।।**

अर्थात् मनुष्य को स्वयं ही अपने प्रयासों से अपने को ऊपर उठाना चाहिए और अपने को पतन की ओर नहीं ले जाना चाहिए। क्योंकि मनुष्य स्वयं ही अपना मित्र है और स्वयं ही अपना शत्रु। यह श्लोक हमें आत्मसंयम, धैर्य, और निरंतर प्रयास करने की प्रेरणा देता है। यह बताता है कि सफलता का मार्ग हमारे अपने हाथों में है। धैर्य और लगन से हम किसी भी कठिनाई को पार कर सकते हैं।

**(भगवद्गीता, अध्याय 6, श्लोक 5)**

आज, मैं अपने अंतर की गहनतम गुहा से उस परम-चेतना का अनंत कृतज्ञता-गान करती हूँ, जिनके दिव्य संचरण ने हमारे मार्ग को निरंतर प्रकाशित किया। उनकी अनुपम कृपा और अमृत-तुल्य आशीर्वाद ने हमारी सामूहिक साधना को पल-पल पोषित किया, जिसके परिणामस्वरूप राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान जमशेदपुर की अमर-वाणी 'मंथन' का त्रयोदश संस्करण आलोकित हुआ है। यह पावन क्षण हमें, आप अमूल्य पाठकों का, जो ज्ञान-पिपासु और विचार-विमर्श के अनन्य साधक हैं, हार्दिक स्वागत करने का एक दैवीय अवसर प्रदान करता है। हमारे सभी पाठकों को "मंथन" के इस अंक के प्रकाशन पर हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं! 'मंथन' केवल एक वार्षिक पत्रिका नहीं, अपितु हमारी आत्मा की अनुगूँज, हमारे विचारों के अनंत आकाश, रचनात्मकता के अक्षय स्रोत और निरंतर परिश्रम की अमर गाथा है। हम भरसक आशा और विश्वास के साथ प्रार्थना करते हैं कि यह संस्करण न केवल आपकी अपेक्षाओं पर खरा उतरेगा, बल्कि आपके मन में नवीन विचारों की अविरल धारा प्रवाहित करेगा, नई प्रेरणाओं के दीप जलाएगा और ज्ञान की अनंत यात्रा में आपका मार्गदर्शन करेगा।

**यथा ह्येकेन चक्रेण न रथस्य गतिर्भवेत्।**

**एवं परुषकारेण विना दैवं न सिद्ध्यति।।**

**(महाभारत, वनपर्व)**

अर्थात् जैसे केवल एक पहिये से रथ नहीं चल सकता, वैसे ही केवल दैव (भाग्य) के सहारे कुछ भी सिद्ध नहीं हो सकता; इसके लिए पुरुषार्थ (परिश्रम) भी उतना ही आवश्यक है। इस पत्रिका का निर्माण वास्तव में मर्त्यलोक के 'सागर मंथन' जैसा दिव्य अनुभव रहा। जिस प्रकार पौराणिक कथाओं में देवता और असुर एक साथ मिलकर अमृत के लिए समुद्र मंथन किये थे, उसी प्रकार 'मंथन' के इस संस्करण में हमारी टीम ने ज्ञान के अमृत को निकालने का अद्भुत प्रयास किया। यह न तो एक व्यक्ति की व्यक्तिगत उपलब्धि है, न ही किसी सीमित समूह का कार्य, बल्कि हर सदस्य के अनिश्चित संकल्प, निरंतर परिश्रम और असीम रचनात्मकता का एक दैवीय संगम है। हर बाधा एक सीढ़ी बनी, हर कठिनाई एक अनुभव, और हर क्षण हमारी सामूहिक साधना का प्रतीक रहा। मैं पूरे 'मंथन' परिवार के प्रति अपनी गहन कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ।

"सागर मंथन" के समान, जहाँ अमृत के साथ अनेक अद्भुत रत्न प्रकट हुए थे, इस पत्रिका के निर्माण में भी हमें ज्ञान और संवेदना के ऐसे अनमोल रत्न प्राप्त हुए हैं, जो एक स्पष्ट साक्ष्य हैं कि हमारे संस्थान के छात्र केवल तकनीकी कौशल के धनी नहीं, बल्कि उनके भीतर एक ऐसी कलात्मक संवेदनशीलता विद्यमान है जो शब्दों के माध्यम से अपनी आंतरिक गहराइयों को स्पर्श करती है। छात्रों ने अपने विचारों को ऐसी भाषा दी है जो व्याकरण की सटीकता के साथ-साथ भावनाओं की गरिमा को भी अक्षुण्ण रखती है। यह पत्रिका हमारे विद्यार्थियों के रचनात्मक और विचारशील मस्तिष्क का एक ऐसा दर्पण है, जो हर पाठक को प्रेरणा के नए आयाम और आनंद के अनंत क्षितिज प्रदान करती है।

जिस प्रकार प्राचीन सागर मंथन में अमृत के साथ हालाहल विष भी प्रकट हुआ, उसी प्रकार हमारी इस यात्रा में भी अनेक चुनौतियाँ और बाधाएँ उपस्थित हुईं। महादेव के दिव्य त्याग और करुणामय हस्तक्षेप ने उस महान मंथन को संतुलित किया, वैसे ही हमारे संकाय सदस्यों के अविरल मार्गदर्शन और निःस्वार्थ समर्पण ने इस पत्रिका के निर्माण को सार्थक बनाया। मैं उन सभी महानुभावों के प्रति अपनी गहन कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ, जिनके अक्षय आशीर्वाद और निरंतर मार्गदर्शन ने इस 'मंथन' को एक जीवंत और साकार रूप प्रदान किया।

आइए, हम सभी अपने प्रयासों में श्रेष्ठता की पराकाष्ठा को स्पर्श करने का प्रयत्न करें और राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान जमशेदपुर की प्रतिष्ठा को नए आयामों तक पहुंचाने का संकल्प लें।

सधन्यवाद।

**MANTHAN**

**इंद्राणी पॉल  
संपादिका, मंथन २०२४  
राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान जमशेदपुर**

# संपादक की कलम से ...



आप सभी को "मंथन" के इस अंक के प्रकाशन पर हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं! यह हमारे लिए गर्व का क्षण है कि हम आपके समक्ष हमारे संस्थान के छात्रों की रचनात्मकता, प्रयास और सामूहिक उत्साह का परिणाम प्रस्तुत कर रहे हैं। इस पत्रिका का संपादन करते हुए, मैंने यह महसूस किया है कि "मंथन" न केवल एक पत्रिका है, बल्कि यह हमारे विचारों, संवेदनाओं और उपलब्धियों का जीवंत दस्तावेज़ है। हमारे संस्थान में शिक्षा का अर्थ केवल किताबी ज्ञान तक सीमित नहीं है, बल्कि यह हमारे समग्र विकास, आत्म-विश्लेषण और रचनात्मकता के साथ जुड़ा हुआ है। **"शिक्षा वह ज्योति है जो अज्ञान के अंधकार को दूर करती है,"** इस आदर्श को आत्मसात् करते हुए, हम न केवल शैक्षणिक उत्कृष्टता की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं, बल्कि विविध क्षेत्रों में भी अपनी क्षमताओं का प्रदर्शन कर रहे हैं।

पिछले एक वर्ष में हमारे साथी छात्रों ने शैक्षणिक क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धियाँ हासिल की हैं। यह हमारी मेहनत और संकाय सदस्यों के मार्गदर्शन का परिणाम है कि हम इस दिशा में निरंतर प्रगति कर रहे हैं। इस अंक के संपादन में मैंने यह दृष्टिकोण पाया है कि खेलकूद और सांस्कृतिक गतिविधियों में भी हम हमेशा से अग्रणी रहे हैं। **"स्वक्रीडायाम् रसानुभूतिः"** इस विचार को आत्मसात् करते हुए, हमारे खिलाड़ियों ने न केवल जीत हासिल की है, बल्कि खेल भावना, अनुशासन और टीमवर्क का परिचय भी दिया है। हमारी सांस्कृतिक गतिविधियों ने हमें न केवल अपनी जड़ों से जोड़े रखा है, बल्कि हमें अपने भीतर की कलात्मकता और सृजनात्मकता से भी परिचित होने का अवसर दिया है।

"मंथन" का यह अंक मेरे साथी छात्रों के विविध आयामों का प्रतिबिंब है। यह हमारे लेखकों, कवियों, चित्रकारों, और विचारकों के विचारों का संग्रह है, जो न केवल उनके व्यक्तिगत अनुभवों को व्यक्त करता है, बल्कि पूरे संस्थान की सामूहिक भावना का भी प्रतीक है। इस पत्रिका का हर पृष्ठ हमें हमारे भीतर छिपी असीम संभावनाओं की याद दिलाता है।

संपादक के रूप में, यह यात्रा मेरे लिए अत्यंत शिक्षाप्रद और प्रेरणादायक रही है। इस प्रक्रिया में, मैंने न केवल अपने साथी छात्रों की असीम प्रतिभा को देखा, बल्कि उनके समर्पण, मेहनत और संस्थान के प्रति उनके प्रेम की भी अनुभूति हुई। यह अनुभव मुझे रामधारी सिंह दिनकर के शब्दों की याद दिलाता है: **"कलम, आज उनकी जय बोल।"**

हमें अपनी लेखनी और कर्म के माध्यम से अपने संस्थान और समाज का गौरव बढ़ाने का निरंतर प्रयास करना चाहिए। इस अवसर पर, मैं अपने सभी सहपाठियों और मार्गदर्शक शिक्षकों का धन्यवाद करना चाहता हूँ, जिन्होंने "मंथन" को सफल बनाने में अपना अमूल्य योगदान दिया है। अंत में, मैं सभी पाठकों से यह आग्रह करता हूँ कि वे इस पत्रिका के हर पृष्ठ को ध्यान से पढ़ें, उसमें छिपे विचारों और भावनाओं को समझें, और इसे अपने जीवन में आत्मसात् करें। हमें गर्व है कि हम इस महान संस्थान का हिस्सा हैं, और हमें इसे और भी श्रेष्ठ बनाने के लिए निरंतर प्रयास करते रहना चाहिए।

**"कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।"**

आइए, हम सभी अपने कर्मों में उत्कृष्टता लाएं और राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान जमशेदपुर के गौरव को और बढ़ाएं।

धन्यवाद।

# रूपांकक की कलम से ...



आप सभी को "मंधन" के इस अंक के प्रकाशन पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ! यह मेरे लिए अत्यंत गौरव का क्षण है कि मैं इस अनूठी पत्रिका का रूपांकक होने के नाते, आप सबके समक्ष हमारे संस्थान की रचनात्मकता, नवाचार और असीम संभावनाओं का अद्वितीय संयोजन प्रस्तुत कर रहा हूँ। इस अंक का प्रत्येक पृष्ठ, केवल पाठ्य सामग्री ही नहीं, अपितु इसे साकार रूप देने के लिए किए गए हमारे सहयोगी प्रयास, समर्पण और कलात्मक दृष्टिकोण का प्रमाण है।

**"वास्तुशिल्पिः सदा सौंदर्यं दिशति।" (शिल्पशास्त्र)**

इस श्लोक में कहा गया है कि एक शिल्पकार हमेशा सौंदर्य का निर्माण करता है। इस पत्रिका के निर्माण में हमने न केवल लेखों और चित्रों को सजाया है, बल्कि उनकी भावनाओं व विचारों को एक स्वरूप देने का प्रयत्न भी किया है, जो न केवल आँखों के लिए सौहार्दपूर्ण हो, अपितु मन को भी प्रेरित करे। 'मंधन' के इस अंक का रूपांकन और सम्पूर्ण प्रस्तुति हमारे संस्थान के समर्पण और सृजनशीलता का प्रतीक है। इस पत्रिका को आकार देते समय, मैंने यह महसूस किया है कि यह केवल रंगों और चित्रों का मिश्रण नहीं है, बल्कि हमारे विद्यार्थियों की अंतर्मुखी क्षमताओं, उनकी सोच और उनके आत्मविश्लेषण की चित्रमय अभिव्यक्ति है।

**"चित्रं काव्यं च समानं कृत्तिनां हृदयोद्गतं।"**

अर्थात्, चित्र और कविता, दोनों ही सृजनशीलता की उपज हैं, जो हृदय से निकलकर अपनी बात कहती हैं। हमने इस पत्रिका में हर पृष्ठ को ऐसे रचा है कि वह हमारे विद्यार्थियों के विचारों का प्रतिबिंब बने और उनकी अनूठी दृष्टिकोण को भी आप तक पहुंचाए। "मंधन" न केवल एक लेखनी का उत्सव है, बल्कि यह हमारी कला, हमारे दृष्टिकोण और हमारे तकनीकी कौशल का मिश्रण भी है। हमने इसमें आधुनिकता को परंपरा के साथ जोड़ा है, ताकि यह पत्रिका न केवल वर्तमान पीढ़ी को प्रेरित करे, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए भी प्रेरणा स्रोत बने।

**"यत्र दृश्यं तत्र सौंदर्यम्।"**

जहाँ भी आप दृष्टि डालेंगे, वहाँ सौंदर्य मिलेगा। हमने इस सिद्धांत को ध्यान में रखते हुए इस पत्रिका को सजाया है, ताकि हर पृष्ठ आपको कुछ नवीन अनुभव हो, और हमारी सामूहिक सोच का प्रतीक बने। इस अवसर पर, मैं उन सभी को हृदय से धन्यवाद व्यक्त करना चाहता हूँ जिन्होंने इस पत्रिका को सजाने और संवारने में अपना बहुमूल्य योगदान दिया है। विशेष रूप से, मेरे साथी रूपांककों और संपादकीय दल को, जिनके बिना यह यात्रा पूरी नहीं हो पाती।

अंततः, यह पत्रिका मेरे लिए केवल एक रूपांकन नहीं है, बल्कि एक जीवंत पत्रिका रही है, जो मुझे निरंतर प्रेरित करती रहेगी। आइए, हम सभी इस 'मंधन' की भावना को आत्मसात् करें, और अपने कर्मों और सृजनशीलता से अपने संस्थान और समाज का गौरव बढ़ाने में योगदान दें।

धन्यवाद।



# अनुक्रमणिका

**PAGE 3-7**

**कृति  
मंजूषा**

---

**PAGE 9-11**

**CINEPHILE  
CARNIVAL**

---

**PAGE 12-22**

**VERSE  
VAULT**

---

**PAGE 23-27**

**NARRATIVE  
NEST**

---

**PAGE 28-33**

**WEALTH  
WISE**

---

**PAGE 34-56**

**STUDENT  
ACTIVITIES**

---

# कृति



# मंजूषा

# सपनों का संसार

-प्रभात रंजन (2021UGME039)

नीले आकाश में उड़ते हैं सपने,  
हर दिशा में फैलते हैं अपने।  
अनजानी राहों पर चल पड़ते हैं,  
मन की गहराईयों में बसते हैं।

चाँदनी रातों में चमकते सितारे,  
आशाओं के दीप जलाते हैं प्यारे।  
हर एक किरण में छिपा है उजाला,  
जीवन के रंगों से भरा ये हाला।

फूलों की महक में बसी है खुशबू,  
हर दिल की धड़कन में बसी है जादू।  
हर नज़र में बसी है नयी कहानी,  
हर मन में बसी है एक नयी रवानी।

पर्वतों की ऊँचाईयों में है चढ़ाई,  
जीवन की सच्चाईयों में है बढ़ाई।  
हर कदम पर है संघर्ष की धारा,  
सपनों को पंख देती है यह प्यारा।

समुद्र की गहराईयों में छिपे हैं मोती,  
जीवन की राहों में छिपे हैं ज्योति।  
हर लहर में छुपी है नयी उम्मीद,  
हर डगर में बसी है नयी नीत।

सूरज की किरणों में है शक्ति,  
जीवन की राहों में है भक्ति।  
हर पल में बसी है नयी सोच,  
हर दिल में बसता है एक नयी खोज।

वृक्षों की छाया में है ठंडक,  
जीवन की धारा में है मिठास।  
हर पत्ता बताता है एक नयी बात,  
हर फूल खिलाता है एक नयी रात।

झरनों की आवाज़ में है संगीत,  
जीवन की धारा में है नयी रीति।  
हर एक बूँद में छिपा है सागर,  
हर एक पल में बसी है नयी नजर।

राहों में मिलते हैं नये साथी,  
जीवन के सफर में बनते हैं साथी।  
हर कदम पर मिलता है एक नया दोस्त,  
हर मोड़ पर बसी है नयी एक गोष्ठ।

समय के पंखों पर उड़ते हैं सपने,  
हर घड़ी में बसते हैं नये अपने।  
हर क्षण में बसी है एक नयी चाह,  
हर दिल में बसता है एक नया साकार।

धूप छाँव का खेल है जीवन,  
हर मंजर में बसता है एक नया मौसम।  
हर सांस में बसी है एक नयी दिशा,  
हर दिल में बसता है एक नयी आशा।

सपनों का संसार है निराला,  
हर दिल में बसता है उजाला।  
हर राह में बसी है एक नयी मंजिल,  
हर कदम पर मिलती है नयी दिल।



# अंधकार की परछाईं

-नेहा सिंह (2022UGEC038)

अंधकार की चादर ओढ़ी रात,  
हर कोने में बसी हुई उसकी बात।  
सन्नाटे की आवाज़ सुनाई दे,  
मन की गहराईयों में एक खामोशी जगे।

तारों की रोशनी भी धुंधली लगे,  
हर दिल में एक अनजाना भय जगे।  
अंधेरे में खो जाती हैं राहें,  
हर कदम पर छिपी रहती हैं आँधियाँ।

चाँदनी भी छुप जाती है कहीं,  
अंधकार की गहराईयों में बसी है सख्ति।  
हर दिशा में बसती है उसकी छाया,  
हर नज़र में दिखती है उसकी माया।

मन के कोनों में जागती है चिंता,  
अंधकार के साये में बसी है अनकही व्यथा।  
हर सोच में धुंधला सा भ्रम,  
हर पल में छिपा रहता है कोई गुमनाम।

अंधकार के बीच जलती है उम्मीद की लौ,  
उसके प्रकाश में छिपा है एक नया डगर।  
हर घड़ी में छुपा है उसका असर,  
हर दिल में बसती है उसकी एक डोर।

कभी डरावना, कभी सुकून भरा,  
अंधकार का अपना ही है एक रंग।  
हर चेहरे पर दिखती है उसकी छाप,  
हर भावना में बसी है उसकी रास।

लेकिन अंधकार का भी है अंत,  
हर रात के बाद आता है एक नया भोर।  
हर अंधेरे में छिपा है एक नया सवेरा,  
हर मन में बसी है उसकी प्यारी शबनम।

अंधकार का सफर है कठिन,  
लेकिन उसके बाद मिलता है नया उजाला।  
हर गहराई से निकलता है एक नया मार्ग,  
और हर दिल में फिर से जगती है एक नयी आशा।



# कर्ण की विडंबना

-इंद्रजीत कुमार (2021UGEE040)

सूर्यपुत्र कहलाया पर तिरस्कार पाया,  
राजमहल में नहीं, सूत के घर में पला।  
धरती से जन्मा, पर स्वर्ग से बिछड़ा,  
अपनी पहचान के लिए जीवन भर लड़ा।

दानी तो ऐसा कि जान भी दे डाले,  
फिर भी जीवन में संघर्ष ही पाए।  
महानता की राह पर चला,  
फिर भी समाज ने उसे नीचा दिखाया।

गुरु द्रोण ने भी उसे अस्वीकारा,  
केवल जाति देख उसे नकारा।  
अपना हक्र पाने को तरसा,  
पर किसी ने नहीं उसकी सुनी दुर्दशा।

धर्म की राह पर चलता रहा,  
फिर भी अधर्म का साथ देना पड़ा।  
दोस्ती निभाई अपने प्रण से,  
पर अंत में अकेला छूटा रण से।

दुशासन का रक्तपान किया,  
भीष्म का वचन मान लिया।  
पर धर्मराज का साथ नहीं पाया,  
हर कदम पर अधर्म का सहारा लिया।

वो जो था नायक, बना खलनायक,  
समाज की नजरों में हमेशा रहानुहगार।  
द्रौपदी का चीरहरण न रोका,  
और उसे भी किया अपने कर्मों का भोग।

कुंती से जन्म लेकर भी,  
माँ का प्रेम न पा सका।  
अपनी सच्चाई से अनजान,  
जीवनभर एक सच्चाई से रहा अनजान।

अपने भाइयों से लड़ना पड़ा,  
अपनी ही माँ से बिछड़ना पड़ा।  
दोनों पक्षों के बीच फंसा,  
फिर भी अधर्म का दामन थामा।

इंद्र के छल का शिकार हुआ,  
अपना कवच-कुंडल देकर, खुद लाचार हुआ।  
माँ के लिए अपना सब कुछ त्यागा,  
पर फिर भी किसी ने उसे न अपनाया।

गंगाजल से उसका नाम मिटाया,  
वो जो था सूर्यपुत्र, कहलाया सूतपुत्र।  
जीवनभर जो सत्य के लिए लड़ा,  
वो अंत में असत्य का सहारा लेकर लड़ा।

धर्म की राह पर जिसने पग धरा,  
वो अधर्म की गलियों में खो गया।  
जो नायक था, वो खलनायक बना,  
जो अपना था, वो पराया हुआ।

अंगराज बना, फिर भी अपमान सहा,  
राजा होकर भी, राजमहल में नहीं बसा।  
जो दानी था, वो खुद ही निर्धन हुआ,  
जो वीर था, वो खुद ही निर्बल हुआ।

कर्ण की विडंबना अनकही रही,  
उसकी पीड़ा किसी ने नहीं सही।  
हर मोड़ पर उसे अपमान मिला,  
हर कदम पर उसे संहार मिला।

रणभूमि में अर्जुन से हुआ सामना,  
कृष्ण का सुदर्शन चक्र बना विधि का खेल।  
सत्य के लिए जिसने युद्ध किया,  
उसका रथ धंस गया, वो हार गया।

माँ से वचन लेकर भी न जीत सका,  
अपने भाइयों से भी न मिल सका।  
धर्म की राह पर जिसने अपना जीवन दिया,  
अधर्म की छाया में उसने प्राण तज दिया।

कुंती का बेटा होकर भी अनजान,  
उसकी पहचान छिपी रही वर्षों तक।  
अपने ही रक्त से लड़ता रहा,  
किसी ने नहीं उसकी पीड़ा को देखा।

अर्जुन के बाणों का शिकार बना,  
मित्रता का उसने सम्मान किया।  
पर सत्य की राह पर चलकर भी,  
उसने अधर्म को साथ लिया।

वो जो था सूर्य का अंश,  
उसके जीवन में छाया अंधकार का दंश।  
जो सच्चा था, वो असत्य में उलझा,  
हर मोड़ पर उसे धोखा मिला।

कर्ण की गाथा अद्वितीय रही,  
उसकी वीरता अमर हो गई।  
पर उसकी पीड़ा को कोई न समझ सका,  
वो जो महान था, उसे इतिहास ने मिटा दिया।

अंत में कर्ण ने प्राण त्यागे,  
लेकिन उसकी कहानी आज भी जिंदा है।  
उसकी विडंबना, उसका संघर्ष,  
हर दिल में बसती है उसकी एक अनकही व्यथा।



# काशी के घाट

-बादल कुमार (2021UGMM020)

गंगा की धारा में बहता पुण्य प्रवाह,  
घाटों पर बसी है अनंत शांति की चाह।  
मंदिरों की घंटियों की मधुर ध्वनि,  
जाग्रत करती आत्मा में अद्वितीय ज्योति।

विश्वनाथ की नगरी का यह अनुपम दृश्य,  
जहाँ ध्यान में लीन हैं ऋषियों के ऋतु।  
साँझ की आरती का अद्भुत प्रकाश,  
हर मन में जगाता है मोक्ष की आस।

मणिकर्णिका की राख में बसी सृष्टि,  
जहाँ जीवन और मृत्यु की होती है साक्षी।  
हर चिता में जलता है अज्ञान का तम,  
और फिर जाग उठता है ज्ञान का प्रखर दम।

काशी की गलियों में बसी है पुरातनता,  
हर ईंट में छुपी है कोई अनमोल कथा।  
साधु-संतों के चरणों में बसी पवित्रता,  
हर स्वर में गूँजता है वेदों का मंत्र।

पंचगंगा के घाट पर बसता है ध्यान,  
जहाँ परमात्मा से मिलन का होता है भान।  
निर्मल जल की हर बूँद में बसी है पूजा,  
हर स्नान में छुपा है आत्मा का शुद्धि का अनुभव।

अस्सी से दशाश्वमेध तक फैली है काशी,  
हर घाट पर बसी है अलौकिक आशा।  
जहाँ हर आराधना में छिपा है अनंत ब्रह्म,  
और हर प्रार्थना में मिलती है मोक्ष की शरण।

काशी की धरती पर बसा है आत्मा का स्वर,  
जहाँ ध्यान में खो जाता है सारा विश्वभर।  
हर प्राण में बसा है शिव का दिव्य प्रकाश,  
काशी में बसती है अनंत शांति की तलाश।



# हिंदी, उर्दू का समावेश

-प्रियांशु राज(2021UGME038)

उर्दू और हिंदी का संबंध ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। उर्दू का हिंदी में समावेश एक जटिल प्रक्रिया रही है, जिसने दोनों भाषाओं को समृद्ध किया है। यह प्रक्रिया भाषा की शुद्धता के साथ-साथ उसकी पहुँच पर भी गहरा प्रभाव डालती है। इस संदर्भ में हिंदी साहित्य में उर्दू के प्रभाव को समझना आवश्यक है, ताकि हम यह देख सकें कि इस समावेश ने भाषा को किस तरह ढाला है और इसके आधुनिक उपयोगों पर क्या प्रभाव डाला है।

उर्दू का उद्भव भारत में मुगल काल के दौरान हुआ, जहाँ विभिन्न भाषाओं और बोलियों का मेल हुआ। उर्दू, जो फ़ारसी, अरबी और तुर्की भाषाओं से प्रभावित थी, धीरे-धीरे भारतीय उपमहाद्वीप की एक प्रमुख भाषा बन गई। हिंदी, जो संस्कृत और प्राकृत से विकसित हुई थी, उर्दू के संपर्क में आने से उसके शब्दों और अभिव्यक्तियों को आत्मसात करने लगी। इस प्रक्रिया ने हिंदी भाषा को एक नई दिशा दी। उदाहरण के लिए, हिंदी में उर्दू के शब्द जैसे "मुहब्बत", "शायरी", और "ख्वाब" ने भाषा को अधिक अभिव्यक्तिपूर्ण बना दिया।

भाषा की शुद्धता के संदर्भ में उर्दू का हिंदी में समावेश एक चुनौती बनकर सामने आया। संस्कृतनिष्ठ हिंदी, जो शुद्धता का प्रतीक मानी जाती थी, उर्दू के शब्दों के आने से उसमें मिलावट का आरोप लगाया जाने लगा। जयशंकर प्रसाद जैसे साहित्यकारों ने अपने लेखन में संस्कृतनिष्ठ शब्दों का प्रयोग किया, ताकि हिंदी की शुद्धता बरकरार रखी जा सके। उनकी कृतियों में उर्दू का प्रभाव बहुत कम देखने को मिलता है, क्योंकि उनका उद्देश्य भाषा की प्राचीनता और शुद्धता को बनाए रखना था। परंतु समय के साथ, हिंदी के साहित्यकारों ने उर्दू के शब्दों को अपनाया और उन्हें अपने लेखन में शामिल किया। प्रेमचंद की कहानियाँ इसका उत्कृष्ट उदाहरण हैं, जहाँ उन्होंने उर्दू के शब्दों का प्रयोग कर अपने पात्रों को जीवंत बना दिया। यह मिलावट भाषा की शुद्धता के प्रश्न को उठाती है, परंतु इसके साथ ही यह भाषा को और अधिक सजीव और अभिव्यक्तिपूर्ण भी बनाती है।

उर्दू के शब्दों का हिंदी में समावेश भाषा की सुलभता को भी बढ़ाता है। उर्दू के शब्द सरल और आम बोलचाल के होते हैं, जिन्हें जनता ने आसानी से स्वीकार किया। इसका परिणाम यह हुआ कि हिंदी आम लोगों की भाषा बन गई। उर्दू के शब्दों ने हिंदी को अधिक सजीव, सुगम, और संवादात्मक बना दिया। गुलजार जैसे कवियों और गीतकारों ने उर्दू और हिंदी के मिश्रण से ऐसी रचनाएँ कीं, जो न केवल साहित्यिक दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं, बल्कि जनमानस के बीच भी अत्यधिक लोकप्रिय हैं। उनके गीतों और कविताओं में उर्दू के शब्दों का प्रयोग भाषा को और अधिक सरल और सुलभ बनाता है, जिससे उसकी पहुँच आम जन तक बढ़ जाती है।

आधुनिक समय में, हिंदी में उर्दू का प्रभाव और भी गहरा हो गया है। टेलीविजन, सिनेमा, और साहित्य में उर्दू के शब्दों का व्यापक रूप से प्रयोग हो रहा है। यह न केवल भाषा को अधिक आकर्षक बनाता है, बल्कि उसे विभिन्न वर्गों के लोगों के लिए सुलभ भी बनाता है। फ़िल्मी गीतों और संवादों में उर्दू के शब्दों का प्रयोग श्रोताओं और दर्शकों को भावनात्मक रूप से अधिक जोड़ता है। जावेद अख्तर जैसे गीतकारों ने उर्दू और हिंदी के समावेश से गीतों को एक नया आयाम दिया है, जो न केवल मनोरंजन प्रदान करता है, बल्कि श्रोताओं को भाषा की विविधता का अनुभव भी कराता है।

हिंदी साहित्य में उर्दू के समावेश का सबसे उत्कृष्ट उदाहरण रामधारी सिंह दिनकर की कविताएँ हैं। दिनकर की रचनाओं में उर्दू के शब्दों का प्रयोग भाषा की सजीवता और भावनात्मकता को और भी बढ़ा देता है। उनकी कविताओं में उर्दू के शब्दों का सम्मिश्रण भाषा को एक नए स्तर पर ले जाता है, जहाँ वह केवल अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं रह जाती, बल्कि एक संवेदनशील अनुभूति का सृजन करती है।

इस प्रकार, उर्दू का हिंदी में समावेश भाषा की शुद्धता पर एक चुनौती के रूप में देखा जा सकता है, लेकिन इसने हिंदी की सुलभता और लोकप्रियता को भी बहुत बढ़ावा दिया है। उर्दू के शब्दों ने हिंदी को एक नया स्वरूप दिया, जिससे वह आम जन की भाषा बन गई। आज के समय में, हिंदी और उर्दू का यह समावेश न केवल भाषा की विविधता को दर्शाता है, बल्कि भारतीय साहित्य और संस्कृति की गहराई को भी उजागर करता है। यह प्रक्रिया एक निरंतर विकास की दिशा में आगे बढ़ती रहेगी, जिससे भाषा और अधिक समृद्ध और सजीव होती जाएगी।

# CINEPHILE



# CARNIVAL

# '12TH FAIL' MOVIE REVIEW | ABSOLUTELY UNMISSABLE

**-ARIN CHAUDHARY (2022UGCS059)**

Post '3 Idiots', producer Vidhu Vinod Chopra as a director offers yet another awe inspiring story to the audience. Fans of '3 Idiots' might find fleeting similarities on a couple of occasions. For instance, '3 Idiots' created the catch phrase 'Aal Izz Well', '12th Fail' should be credited for 'Restart', which might prove to be of great significance for every student at any level and in any stream. There is also a scene inspired by the 'definition of machine' scene in '3 Idiots' that works bang on.

A moment in the final scenes summarises the crux of the story's idea or the theme, that is when Manoj Kumar Sharma (Vikrant Massey) visits a DSP (Priyanshu Chatterjee) and is greeted with a salute; he informs who he is to the DSP who to his pleasant surprise remembered the student who had failed in class 12 but was inspired by the DSP and vowed to become one himself. The DSP shared his 'guru mantra' / didactic message that 'cheaters never prosper'. The entire sequence might make one's eyes moist.

After a long time comes a topical film with clap worthy and meaningful dialogues that should help students to never lose heart and keep trying.

'12th Fail' is based on the novel 'Twelfth Fail', by Anurag Pathak. The film is inspired by the real life story of IPS Officer Manoj Kumar Sharma and IRS Officer Shraddha Joshi.

Manoj Kumar Sharma (Vikrant Massey) comes from a tiny hamlet village in Chambal (a region known for bandits). Oppressed by crooked local cops and a mayor who demands bribe for everything, Manoj gets the life savings of his grandmother (Sarita Joshi) to go to Delhi and take the challenging civil service exams that will pave his way to becoming a police officer.

Post '3 Idiots' producer Vidhu Vinod Chopra as director offers yet another awe inspiring story to the audience. For audience who must be fans of '3 Idiots' might find fleeting similarities on a couple of occasions. For instance, '3 Idiots' created the catch phrase 'Aal Izz Well', '12th Fail' should be credited for 'Restart', which might prove to be of great significance for every student at any level, in any stream. There is also a scene inspired by the 'definition of machine' scene in '3 Idiots' that works bang on. A scene in the final reels summarises the crux of the story idea or the theme. When Manoj Kumar Sharma (Vikrant Massey) visits a DSP (Priyanshu Chatterjee), is greeted with a salute; he informs who he is to the pleasant surprise of the DSP who remembers the student who had failed in class 12 but was inspired with the DSP and vowed to become one. The DSP shares his 'guru mantra' / didactic message that 'cheaters never prosper'. The entire sequence might make one's eyes moist. After a long time comes a topical film with clap worthy and meaningful dialogues that should help students to never lose heart and keep trying. '12th Fail' is based on the novel 'Twelfth Fail', by Anurag Pathak. The film is inspired by the real life story of IPS Officer Manoj Kumar Sharma and IRS Officer Shraddha Joshi. Manoj Kumar Sharma (Vikrant Massey) comes from a tiny hamlet/village in Chambal (a region known for bandits). Oppressed by crooked local cops and a mayor who demands bribes for everything, Manoj gets the life savings of his grandmother (Sarita Joshi) to go to Delhi and take the challenging civil service exams that will allow him to become a police officer.



The narrative also shows how people help each other and presents two extreme ends of methodologies. While one says passing these exams is like playing Snakes & Ladders, with one failure sending you back to the beginning and only a finite number of chances before you're disqualified, the other points out that the secret to passing a key set of exams is learning how to write a dozen minimum 200-words essays in a stipulated amount of time.

Vikrant Massey as Manoj Kumar Sharma steals the show; the way he gets into the skin of the character makes it absolutely believable. The other important aspect of the narrative is the setting and the environment where the various characters are placed. The flour mill (setting) mentioned above is something that might bring jitters to the faint hearted.

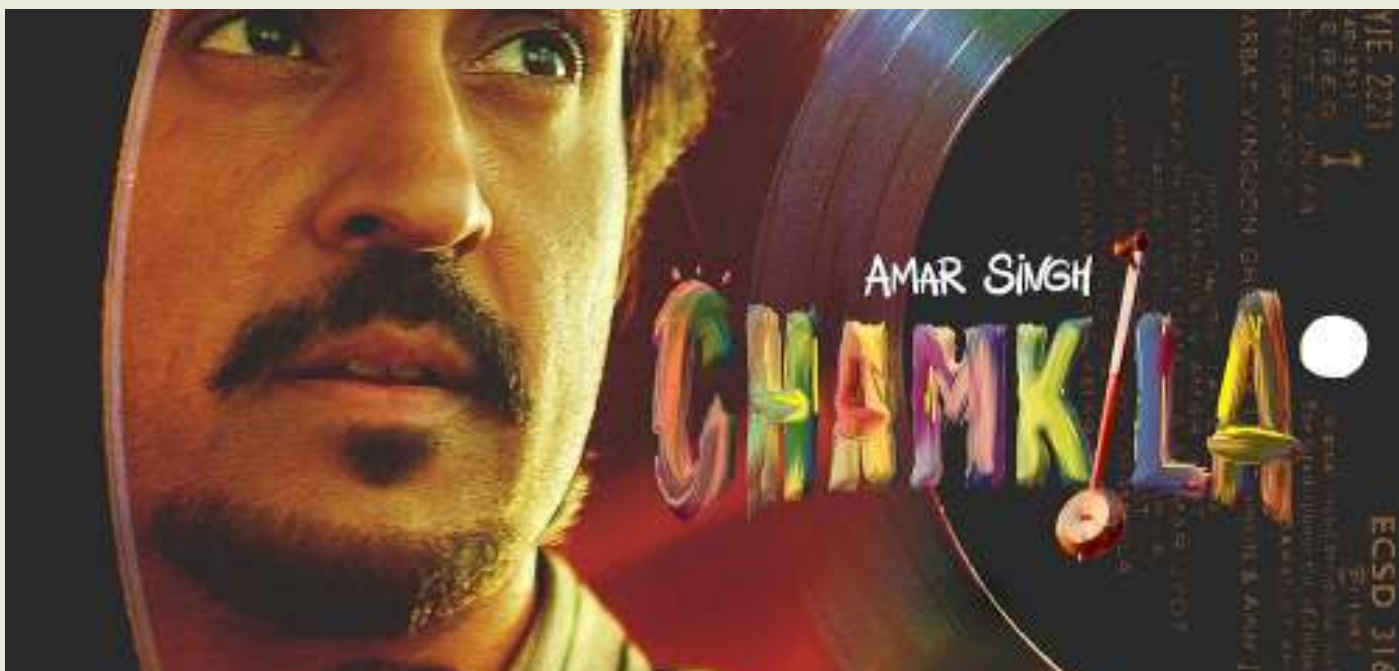
The rest of the cast too are apt and help transport you into the world of competitive exams.

While there is far too much that can be said about this film but that might take away the very experience of this semi-biographical story that has elements of emotion, hope and despair, a hint of romance and bromance too. The film doesn't shy away from accepting that there's still a lot of prejudice and bias in the system, which makes life tough for sincere youth akin to Manoj.

All in all, '12th Fail' is not about failures but about 'restart-ing' and aiming to achieve the unachievable through honesty; a must watch for students and everyone around them and a sure contender for various Awards.

## "CHAMKILA" MOVIE REVIEW: A VIBRANT MUSICAL TRIBUTE

-PRANJAL MISHRA (2022UGPI060)



Imtiaz Ali's "Chamkila" is a lively biopic that celebrates the life and music of the iconic Punjabi singer, Amar Singh Chamkila. Known for his rough musicality and teasing lyrics, Chamkila's songs were not only provocative but also spoke to the rural class disaffections of Punjab in the 1980s. His life was tragically cut short when he was gunned down in 1988, leaving behind a legacy that continues to captivate audiences.

Ali's film is more a celebration than a deep dive into Chamkila's life. It doesn't aim to clear mysteries or exorcise ghosts but rather offers a glimpse into the artist's interiority. T.

Diljit Dosanjh shines as Chamkila, bringing a gentle charm to the role. His portrayal captures the essence of the singer, though

some may find it lacking the charismatic loucheness that defined Chamkila in real life. Parineeti Chopra, in a limited part as Amarjot, Chamkila's wife and singing partner, delivers a sincere performance.

The film's greatest strength lies in its unflinching portrayal of a complex figure. It doesn't shy away from the controversies surrounding Chamkila, his lyrics, and his lifestyle. However, it also humanizes him, exploring the pressures and contradictions he faced.

While the film is undoubtedly bold and provocative, it might not be for everyone. Nevertheless, Chamkila is a significant contribution to Indian cinema, a film that sparks conversations and challenges the status quo.

One of the film's strengths is its portrayal of the sociopolitical atmosphere of 1980s Punjab. From rivals to admirers, everyone had a Chamkila story to tell. Like moths drawn to a flame, they were all briefly illuminated by his light, leaving behind a legacy that continues to inspire awe and admiration.

Overall, Chamkila is a compelling biopic that offers a raw, unflinching look at a controversial figure. It's a film that demands to be seen and discussed.

Would you like to know more about the film's music, or perhaps compare it to other biopics?

## SHAITAN MOVIE – A VIEW OF A HYPNOTHERAPIST

**-PRASHANSA PARWAL(2021UGEC089)**

I was always fascinated as a child by the mystery of life and the folklore stories primarily around supernatural forces – be it God or ghost! It all started with Ambuli mama, Vikaram and Vedhal and the umpteen movies I've seen around the same genre- from spiritual goddesses, to black magic to mesmerism and whatnot! The suppressed childhood memories came alive when I moved into the field of psychology and when I decided to specialize, I had only one thing in mind which is Hypnosis. It has been almost 4 years since I have been practicing as a hypnotherapist and am fortunate enough to have done a good number of sessions on different hypnotherapy techniques and *each time* I plan a session, I am excited to learn the depth of the human mind thanks to [Dr. Jini K Gopinath](#) for teaching, making the learning interesting and relatable!

Even today it is intriguing to me, the way movies portray hypnosis where people just blurt out every secret in session and their mind is controlled completely by “Evil” people, however, reality is totally opposite of what is portrayed – making the client relaxed itself is a huge task and maneuvering through one's subconscious mind requires a lot of patience and energy!

Now let us come to the movie and how the movie combined hypnosis, psychology and tantric practices – this is purely my personal view and there is no right or wrong but just a perspective!

1. The girl who gets under the spell shows her aversion towards specific food and shows symptoms of “anorexia”, it may also be combined with OCD especially when she remarks on the smell of tea!

2. The personality of R.Madavan is clearly shown as a person with NPD (Narcissistic Personality Disorder) - manipulative, demanding ,lacking in empathy, arrogant, self centered and so on – his dialogs like “ I am God “ and a scene where the girl tells him “Uncle please keep the tea away as I don't like the smell “ and once he takes control , he makes her eat tea leaves mentioning the same dialogue.

The narrative also shows how people help each other and presents two extreme ends of methodologies. The other points out that the secret to



passing a key set of exams is learning how to write a dozen minimum 200-words essays in a stipulated amount of time.

3. It starts off with old tantric practice of “Vasiyam” (Mesmerism) through food / objects that is through a laddu and gains the control of her soul for evil purposes –and here lies a loophole : In this era of social media awareness, who just eats a suspicious looking laddu in a plastic box from a stranger without even thinking, that too a girl who has been presented to be snobbish? The fact is that Sage Agasthya says that one gets to use Vaisya for attracting knowledge, success in their duty and for good karma, however it has always been used in black magic for wrong purposes.

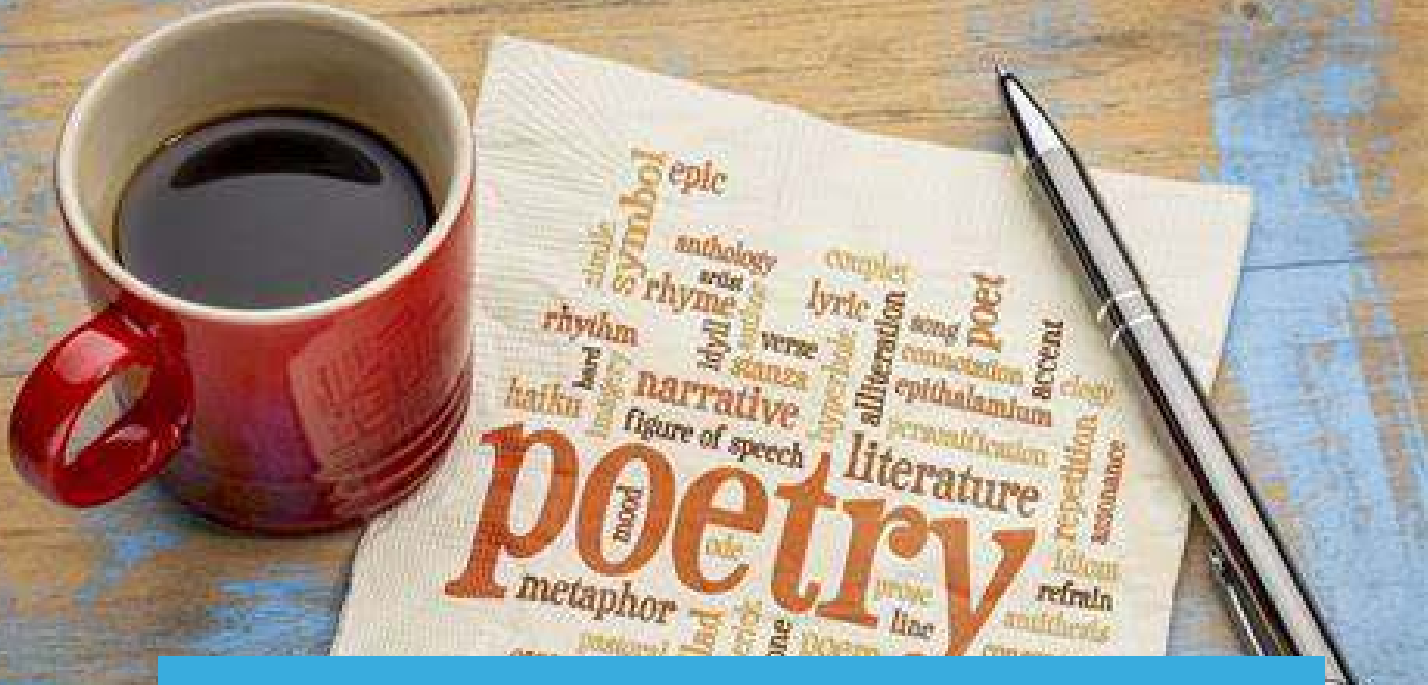
4. Maddy uses lot of hypnotic suggestions throughout once he gains the attention of his subject. Though he starts off with a laddu, he deepens his link with suggestive words moving from informal suggestions to formal suggestions. I interestingly noticed that he used a lot of “Beta” and there was a pause! Though, it would be wrong to say that Maddy used hypnotic voice, he did use the hypnotic silences and spacing right! And also a lot of staring! I assume part of *nokku varmam* from ancient kerala / down south practice !

6. The climax to me is totally cinematic and moves completely into possession, black magic, and so on! A phrase of “ I FREE YOU “ , frees all the souls.

# VERSE



# VAULT



## THE POWER OF POETRY

-PRIYANSHU (2022UGMM017)

Poetry has long been recognized as a powerful medium that can influence societies and individuals, fostering change and reflecting the depths of human emotion and experience. Throughout history, poets have used their craft to challenge the status quo, inspire movements, and bring about tangible change. By examining the role of poetry in various contexts, from historical events to its influence on modern social movements, we can better understand its transformative power.

One of the most profound ways poetry influences society is through its capacity to inspire action and awareness about social and political issues. For example, during the Vietnam War, poets like Allen Ginsberg and Adrienne Rich used their words to express dissent and galvanize anti-war sentiment. Ginsberg's poem "Howl" and Rich's "What Kind of Times Are These?" are poignant examples of how poetry can capture complex societal feelings in a way that resonates widely and deeply, urging a reconsideration of moral and ethical standards.

In more recent times, poets have continued to play a critical role in activism. Amanda Gorman's poem "The Hill We Climb," delivered at the inauguration of President Joe Biden in January 2021, not only captured the challenges facing America but also offered hope and a call for unity in a time of deep division. Her performance, broadcasted globally, showed how poetry could reach across political and social boundaries to promote healing and solidarity.

Poetry's influence extends beyond immediate political or social contexts; it also has a profound impact on human nature by fostering empathy and introspection. Classical

poets like William Wordsworth and Emily Dickinson explored the human condition, urging readers to connect with nature and the inner self. Wordsworth's "Lines Composed a Few Miles above Tintern Abbey", for instance, invites readers to reflect on the peaceful power of the natural landscape as a medium for spiritual and moral growth.

The narrative also shows how people help each other and presents two extreme ends of methodologies. While one says passing these exams is like playing Snakes & Ladders, with one failure sending you back to the beginning and only a finite number of chances before you're disqualified. The other points out that the secret to passing a key set of exams is learning how to write a dozen minimum 200-words essays in a stipulated amount of time.

In the digital age, the power of poetry to affect human nature and provoke change has adapted to new mediums. Platforms like Instagram have given rise to "Instapoets" like Rupi Kaur, whose succinct, poignant verses on love, loss, and feminism resonate with millions of followers. Kaur's ability to distill complex emotions and experiences into a few lines makes poetry accessible and relatable, highlighting its enduring relevance.

Moreover, poetry has played a pivotal role in cultural and resistance movements across the globe. The works of Palestinian poet Mahmoud Darwish and Chilean poet Pablo Neruda have mobilized people and articulated collective narratives of resistance and identity. Darwish's writings, imbued with the pain and beauty of the Palestinian experience, and Neruda's poems, which often carried a strong political message against fascism, have both inspired countless individuals to look at their struggles through a poetic lens.

The therapeutic aspects of poetry cannot be overlooked. Medical humanities, a field that intersects healthcare and humanistic disciplines, has recognized poetry therapy as a valuable tool for healing. Studies have shown that poetry can help individuals cope with trauma and grief, providing a unique space for expression and processing difficult emotions.

In conclusion, the power of poetry to influence events and shape human nature is undeniable. From stirring national sentiments to touching the deepest parts of the individual psyche, poetry remains a potent force in the cultural and emotional landscape of societies. Its ability to condense complex ideas and emotions into evocative and compelling forms makes it a unique tool for change and understanding. As we continue to face global challenges, poetry will undoubtedly remain at the forefront of artistic and social movements, continuing its long legacy of influence and inspiration.



## IS CHAT GPT MAKING YOU DUMB?

-ISHITA DEY  
(2022UGEC117)

information being fed.

- A study found that students who relied on ChatGPT for information scored lower on tests requiring critical analysis and reflection.
- This highlights the risk of passively accepting information generated by LLMs without engaging in critical thinking.
- I remember spending hours on Chatgpt when it was launched. No doubt it was exciting asking queries or generating plans or ideas to find answers that were not easily available.

However, this soon became an addiction. I began to depend on it for everything. From goal planning to meal planning to even generating ideas for my assignment. Terrible mistake.

Something that was designed to assist and improve our efficiency soon became a quick scheme to lose my creativity and thinking capabilities. This brings me to the next point.

### The Crutch of Creativity

LLMs can be powerful tools for brainstorming and generating ideas.

However, a constant reliance on them might hinder independent creative thinking. It can be helpful when you are struggling to generate ideas burnt out or facing creative block but it is not a replacement for your thinking.

From crafting cover letters to writing poetry to pretending to be Jane Austen, Chat GPT has been a revolutionizing invention.

It has changed the way we interact, and now it even answers like a real human. It is exciting and scary at the same time.

And like they say, with great power comes great responsibility. In this case, the great power brings a nagging question "Is Chat GPT making us dumb?"

The answer, as with most things in life, isn't a simple yes or no. Here are the reasons behind the concerns.

While ChatGPT and other large language models (LLMs) can generate human-quality text and complete a variety of tasks, a Stanford communication scholar, Jeff Hancock, raises concerns about their potential impact on our thinking and communication.

### The Illusion of Knowledge

LLMs are masters of mimicry. They can synthesize from massive data sets and generate texts that sound convincingly knowledgeable. The problem is it creates an illusion of deep understanding that comes from the data and

Creative thinking is like exercising. The more you do the better you become but if we start outsourcing our thoughts as well, we will slowly lose the capability of fresh thoughts and ideas.

The worst of all was when I was dependent on it so much that I would spend hours correcting Chatgpt by iterating the prompts to get the best answer rather than doing my own research. Pre-GPT era ensured we worked hard to do our work. Did our own deep research. Comprehend the material and then form an opinion. Finding the answer to one question would mean following these steps:

- Google search to find relevant pages
- Browsing through multiple articles to find the perfect solution
- Reading a variety of genres to form opinions and analyze information.
- Finally summarizing things in our own words.

#### Find a Balance

It's important to remember that LLMs are tools, and like any tool, their effectiveness depends on how we use them. Here are some ways to leverage them for good:

- Fact-checking: Use LLMs as a starting point for research, but always verify information with credible sources.
- Brainstorming: Leverage LLMs to generate ideas, but then critically evaluate and refine them yourself.
- Learning new concepts: Use LLMs to get a broad overview of a topic, then delve deeper with traditional study methods.

Ultimately, LLMs should complement, not replace, our own thinking skills. By using them strategically and focusing on critical analysis, research, and independent thought, we can ensure that AI aids, not hinder, our intellectual growth.



## NO POEMS ON A DEAD PLANET

-PRIYANSHU RAJ (2021UGME038)

There's a question that has actively haunted me since my teens. the answer to this question is an answer in progress, and it's mine, not intended to be a guide for anyone else.

But I was asked in person recently, how I've gotten to where I am now, doing what I do now and I couldn't escape the question repeating, perhaps part panic, part hubris in the music of my mind.

#### In the end, what will they say you did?

My body (specifically a part of my brain) broke when I was 15, I have been disabled for longer than I have been able-bodied. Combine that with looming climate crises & more 'unprecedented' events occurring in the past decade than in the span of the previous generation.

I've had no choice but to be acutely aware of time & our fleeting temporality.

I have always chosen my path based on that awareness.

At first, it was a choice between Preacher and Poet. Religion, exemplified for me in The Church shifted from a flawed but hopeful institution for change, to a self-absorbed, detached & often impotent organisation, more focused on its survival than its mission to 'steward' our planet (gen 2:15) so I took my relationship with the Divine & went elsewhere. A poet could reach more hearts & inspire more change, regardless of belief. So I chose poet.

Then it was deciding what kind of poet, celebrant of the self? Agitator? Instigator? Word artist? or Chronicler? Maybe all of the above? I wanted to use my love of and skill with the written word to change this world for the better. There was no one way to do this and in the darkest times bereft of guidance, I felt that the most I could ever achieve would be to capture fragments of 'what we were' before either I or we fell apart.

Much of the work in these darker times would become the spine of "[We are Always and Forever Ending](#)" but once the Hothouse

of University, I was reintroduced, to Baldwin, Lourde, Baraka, and I set my aim on being a poet for communities, either building for other poets to hone their crafts or working with groups to find their voice and be heard.

Once my aim was locked in it became a question of focus on writing or community. The answer led me to production and facilitation for others.

Learning to build and strategize led me to tech and its infinite capabilities, leveraging technology toward the goal of community building and creative expression via Overhear. All the while working with as many groups agitating for change as would allow me in the room. Protest messaging & performance, Mass communication, appeals to authority.

Developing the power of Rhetoric, the strength of a poetic message and the insight gained from creative self-analysis with people galvanised by positive social causes to change hearts and minds, be heard in an increasingly saturated attention economy.

I have been keeping the lights on by facilitating and producing the creative endeavours of others, making the seemingly impossible possible.

I tried brief stints in Government as a civil servant (Valiant, thankless and Taxing) and in law (Beautiful & Sisyphean and not for me.)

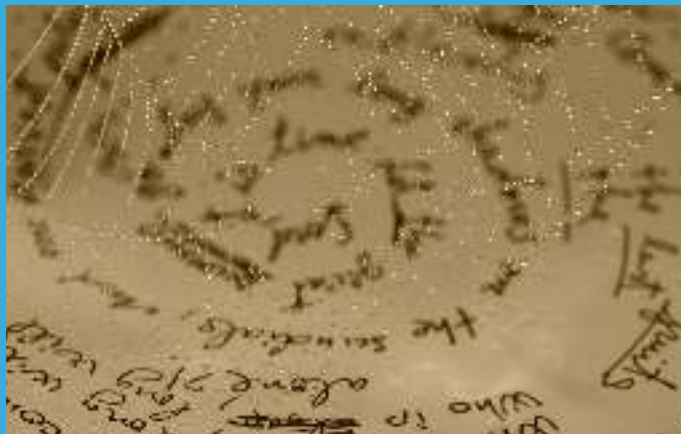
Always with an understanding that if this is the last action I get to take, with my fragile life on this fragile planet, it better make a difference.

### **What can you say you were doing when the world caught fire?**

Is 'Preaching the power of Poetry, and chronicling the planet & people in flux' enough?

Catching up with a community solar project that I'd had the opportunity to hear about during its nascence in a webinar in the thick of the pandemic stimulated the question again.

These courageous folk were putting their minds and bodies on the line (literally on the rooftops) to get their powerplant idea over the line. Knowing that the creation of that infrastructure and the permission to run it co-operatively would change the local landscape for generations. and it had worked, it was working.



That same webinar we were debating whether the performative protests of Extinction rebellion were narratively cohesive in a timeframe, Art, protest, and lobbying had achieved so little material gain. Power projects, sustainability co-operatives and more capital-focused projects like Ripple Energy have achieved minor revolutions.

### **Was authoring poems, on a burning planet enough?**

I knew how to build, I had a decade of community development experience, technical expertise and an understanding of the balance between people and infrastructure in the achievement of the impossible. I am never going to put the pen down. Writing is at the heart of me, I have ink for blood. But I no longer think that Poetry alone will *save us*.

So, I took a punt, and leveraged my degrees into as many Grad Programmes, and Blue Sky positions as I could muster with organisations that are building, organising and policymaking their way out of the Crises we're in; specifically the Energy Crisis. I knew people in the sector both on the inside of companies and agitators for change. It was an industry I had come to understand and appreciate through adjacency that seemed ripe for change. Thinking if I can Bootstrap an app, I can facilitate romantic poetry in a PRU, break forms, produce films and radio and do it all on 60% or less of what everyone else seems to be working with in terms of physicality, time and money. I could make an enormous difference to the effort to solve problems that have been driver of that ticking clock.

### **What will they remember you for?**

Maybe it wouldn't be so consuming a question If I could work out how to give us more time. Maybe being part of a solution that makes things collectively better even by a tiny amount could be a worthy answer to the question.

I got a lot of No's, some wonderfully gracious No's, a small group of Yes's from smaller organisations I had to consider, and a solid Yes from National Grid.

National Grid is at the vanguard of the climate crisis Clawback. Its Future Energy Strategy authored by NGENSO (soon to be the independent NESO) is the framework for how we could survive this and come out stronger. Going far past what Governments have pledged and the mealy-mouthed words of the fossil fuel-based energy generators.

The same day I finished reading the report I applied to the scheme.

My thinking was simple. If people are willing to sit on rooftops, and glue themselves to roads to effect change, I can dedicate the next decade of my life to working on the Energy crisis rather than just freewheeling as a poet. or facilitating the message of those at the true coalface of the problem. I have skills that can benefit the cause.

**Should It be the last thing I do. Becoming one of 100s, Building the infrastructure for a green energy revolution isn't a bad way to be remembered.**

In April I got through the selection and accepted their offer and yesterday I attended an induction day.

I sat in a room of 70+ driven, intelligent & compassionate analysts, project managers and engineers who had also answered the call to help build a new future and I couldn't be prouder to work alongside them.

I look forward to a legacy beyond the written word and the protest action.

Every Pylon, Panel and Turbine I help bring into being will change this nation a little for the better and I can still use my wordsmithing to change hearts and minds.

Like I said, not a bad thing to be remembered for.



## THESE ARE THE CONDITIONS

-HRISHITA SINGH (2022UGEC061)

Two souls on separate voyages,  
not just beginning but well begun,  
knowing enough of the world but still in love  
with what is good.

This is how it happens.  
A passionate perceiving,  
a beholding of a second center to the world,  
a blossoming of incompleteness.

This is where it goes.  
In the single tending of the two the voyages  
converge and,  
soul subsumed in soul,  
the two are one.

And this is how it ends.  
It never does.  
Love is the gentle absence of many other  
things.  
It will be the last thing left,  
the final trace when our kind is finally done.



# The Silence in My Voice

—SHANTANU (20221UGEC004)

In the canvas of life, there are threads woven with joy, laughter, and love, and then there are threads that bear the weight of loss, heartache, and solitude. These threads, both bright and dark, converge to create the unique patterns that shape our existence. This is the story of the darkest of threads, the ones that seemed to drain all color from my world, and how, in the midst of that darkness, I found the strength to keep moving forward.

It began with the hushed whisper of fate as it claimed my father. His presence, once a cornerstone of my life, suddenly vanished, leaving behind a silence in our voice that echoed through our family. His absence taught me the fragility of life and the need to cherish every moment, for time is a fleeting gift.

Then came the heartbreak, a love that left me stranded on the shores of despair. It was a love I thought would be forever, but it turned out to be a temporary chapter in my story. The pain was sharp, the wounds deep, but in that silence, I discovered the resilience of my spirit, the power to heal, and the capacity to love myself.

A best friend, once inseparable, drifted away like a ship lost at sea. The camaraderie we shared dissolved into the silence of unspoken words and distant memories. Yet, I realized that friendships, like life, are ever-changing. New friendships would bloom, and I would treasure the moments we had while they lasted.

My sister, my confidante and partner in mischief, left home to forge her own path. Her absence created an emptiness that reverberated through the walls of our childhood. But it was also a lesson in independence, growth, and the necessity of allowing our loved ones the freedom to discover themselves.

In the midst of these losses, I discovered a wellspring of strength within me. It was the kind of strength that emerges when we face life's most challenging moments head-on. It was the strength to persevere, to find joy in small victories, and to turn the silence in our voice into a powerful narrative of resilience.

Through these trials, I learned that life's symphony isn't always composed of harmonious notes; sometimes, it's the pauses—the silences—that give it depth and meaning. It is in these moments of stillness that we find the courage to rewrite our stories, to rebuild our lives, and to embrace the beauty of impermanence.

"The Silence in My Voice" is not just a story of losses; it is a testament to the human spirit's capacity to endure, adapt, and flourish. It is a reminder that even in the face of the darkest threads, we can find the strength to weave a tapestry of hope, resilience, and enduring love.

# The Light Within My Soul

---

-RITWIK SINGH (2021UGCS047)

In the depths of my soul,  
A flickering flame burning...  
A beacon of hope  
Sparked from passion in a dark world  
That is poisoned by greed.  
Whispering dreams filled with quest  
Made of hope and love,  
This little light guides me on a path  
With a selfless deed.  
Through struggles and sweat,  
Yet it remains strong and bright  
A reminder that within me,  
Strength will outlast  
Senseless moments of doubt.  
Dances and flickers with excitement,  
That sweet and fragile glow.  
Yet within it holds a great power  
To overcome the shadows  
That threaten to consume  
And continues to grow.  
Leading me to a brighter, hopeful bloom  
Wiping out the senseless evil doom.  
So I tend to this light, with tender care  
For within it, my spirit is laid bare  
A reminder that even in the darkest of night  
The light within me will always shine bright!



# Parting

-AASHIKA PRAKAASH  
(2021UGME110)

You left, just like that,  
No last goodbyes,  
no last hugs,  
"I meant a lot to you", I had thought,  
Oh well, seems I was quite wrong.

Weeks ran into months, years gone,  
I wonder how you feel without me,  
I feel miserable knowing you'd be alone,  
But do you even care that I'm so lonely?

I wish I had hugged you tighter,  
Listened to your whines a bit more,  
Waited on you a little longer,  
But you should have been patient with me, just a bit more.

I would have lit a candle for you,  
But your thoughts would still burn like a huge fire,  
Your memories still linger like a persistent flame,  
Else I'd have burnt your things up in a huge pyre.

I hope it's better over there,  
Six years away, and still counting,  
I sit and wish you'd taken me along,  
Either way, rest well my love.

# WAR WITHIN



-ASMI SRIVASTAVA (2023UGEE059)

The world is such, the world is cruel  
The world puts you with you in a duel,  
Your mind a ring, referee your soul  
Mute blindfolded and no one to cajole.  
wholly dark except the flickering flames  
captious crowd and barbaric games.

The world is such, the world is cruel  
Adorning conflicts as some jewel  
The mind and heart's perpetual war  
The boat neither sailing nor ashore  
Killing you every moment bit by bit  
Scourging soul and draining your wit

The world is such, the world is cruel  
To the inferno of hatred it adds more fuel  
Makes you hate even your own very self  
Protest your existence since as young as  
twelve  
Slaying desires with the Damascus of duty  
Drowning in air with grace and beauty

The world is such, the world is cruel  
The world puts you with you in a duel  
Put down the weapons, dispel the crowd  
Embrace yourself, rejoice out loud  
Free your soul, protect them flames  
Let there be light with no heavy claims



# FREEDOM - A PARADOX\*

-ADITYA SINGH (2023UGCM013)

Freedom - the sweet taste of liberty! It's what we all strive for, what we cherish and hold dear. But, my friend, freedom is a complex beast. It's a paradox, a delicate dance between liberty and restraint.

Think about it, absolute freedom would lead to chaos, a free-for-all where might makes right. No, true freedom requires some boundaries, some rules to keep us in check. Laws and regulations are necessary to protect our individual freedoms and maintain social order.

And it's not just about societal constraints, my friend. Even in our personal lives, we must balance our desires with self-discipline. We must limit our immediate wants to achieve our long-term goals. The student who puts off partying to study, the entrepreneur who puts in the extra hours to build their business - they're not giving up freedom, they're exercising it in a more meaningful way.

And then there's the political sphere, where we delegate power to our leaders to create a system that protects and enhances our freedoms. It's a delicate balance, a trade-off between individual rights and collective responsibilities.

You see, freedom isn't a fixed state, it's a dynamic balance. It's a negotiation between liberty and constraint, individual rights and collective responsibilities. And when we embrace this paradox, we can build societies where freedom is both preserved and meaningful.

So, let's appreciate the complexities of freedom, let's understand that true liberty isn't about the absence of restrictions but about finding the right balance that allows everyone to thrive.

At the conclusion I would like to ask this question to your own self - Are you really free?



## AT LONG, LONG LAST

-AAMEYA DEVANSH (2023UGCS098)

They look at me and they ask,  
"How's it feel on top of the rainbow?"  
And I've started to wonder why  
Do I never speak the truth but the  
inspiring lie?

They want me to say "It's like heaven",  
And it is, but I wish I could tell them  
It's hell on earth to be heavenly,  
Yeah, that's Taylor Swift, that should  
tell you I'm lonely.

They'll remark, "Lonely? But you have a  
lover!"  
And I'll just smile, for they don't know  
That my man won't even hold me  
Without first checking if there's  
someone around from "society".

Why?

Why can't I place a kiss on his cheeks  
While we sit by the Ganges in peace?  
Why can't I wrap my arms around his  
While we watch the Aurora Borealis?

I wish one day he'll take my hand and  
look at me,  
And for longer than a couple of blinks  
He'll hold me transfixed with his stare  
Unafraid of "society" and its glare.

"But what if fate denies you from ever  
seeing that day?"

I wish, then, a million sunsets from  
now,  
As I look down from among the stars  
They'll be looking back at me, learning  
the rainbow's past,  
Their fingers entwined, at long, long  
last.

# THE OPEN SECRET OF SILENCE: A POEM FOR ENLIGHTENMENT

-SWEKSHA MISRA (2023UGEE101)

In your presence, bliss and liberation flow,  
No end in sight, you must have tricked me so.  
But you say, "I am simple, without a secret to keep,  
An open book, blank and deep."

"If you want to be, learn not to be,  
Disappear as God does, set yourself free.  
Let life flow in its natural way,  
The art of being is not to sway."

"Silence is the simplest art, not a doing but a state,  
Enlightenment through laziness, just wait.  
You've already got it, your nature's true,  
Busy with outer tasks, you miss what's in you."

"Deep within, beauty and bliss reside,  
Be kind to yourself, just sit and abide.  
Relax not with a method, but by ceasing to strive,  
Do nothing, and you'll truly be alive."

"Just be and watch, witness what comes,  
Thoughts will pass, your body will hum.  
Don't identify, be a watcher on the hill,  
Let the valley flow, serene and still."

"Meditation's a knack, not a complex art,  
A little patience, a silent start.  
Old habits may linger, thoughts rush in,  
Watch them pass, don't hold them within."

"Religions teach to force the mind,  
But forced stillness isn't the kind.  
When silence descends without a fight,  
That's the moment of pure delight."

"A watcher has no judgment, no pretense,  
Like a mirror reflects, in pure innocence.  
Simply witness, be the silent lake,  
Patience brings peace, no effort to make."

"Moments of silence, gaps will grow,  
Thoughts fade, true meditation will show.  
In those gaps, your home you'll find,  
Silence eternal, body and mind."

"No dreams for a meditator, thoughts' cousin-brothers,  
If thoughts disappear, dreams won't bother.  
Silence for twenty-four hours, a serene day,  
This is the secret I convey."

"Near a lake, you feel the cool air,  
In the forest, the atmosphere's rare.  
Come close to me, not by distance or creed,  
Live in the moment, let go of past need."

"Not a Christian, Hindu, Muslim or Jew,  
No ideology, just the present, it's true.  
The only reality is this moment now,  
Feel the serenity, without knowing how."

"I am a non-doer, just here to be,  
Like trees, lakes, sun, and sea.  
Come close or go, it's up to you,  
The secret of bliss, always within you."

"When you realize this truth and feel,  
The master's happiness, your wounds will heal.  
Independence in silence, joy you've known,  
A disciple becomes a master, truly on their own."



# LION IN A DREAM : PSYCHOLOGICAL ANALYSIS OF THE SLEEPING PSYCHE

-SARA SINGH (2023UGME006)

Has the reader ever woken up in the middle of the night panting or screaming because of a nightmare? Has he ever been chased by a mustang, fallen down a skyscraper, ever seen faces of familiar criminals in his sleep? Has he ever been reduced to Kafka's mouse, with the walls narrowing on him and the one with wisdom as his only end? Has it ever been that the vain being has waited a second before hitting that alarm clock to step into the vivid world of dreams? Or perhaps has he ever waited a second after to feel nostalgic about the river of imagery he just skinny-dipped in?

A few days back, in a mere twenty-five-minute nap, I saw familiar imagery that forced me to write this article—a lion in a dream, one with a luscious flowing mane and a scarred hide, standing at a distance from me in all glory. Eyes a striking shade of auburn, alm-

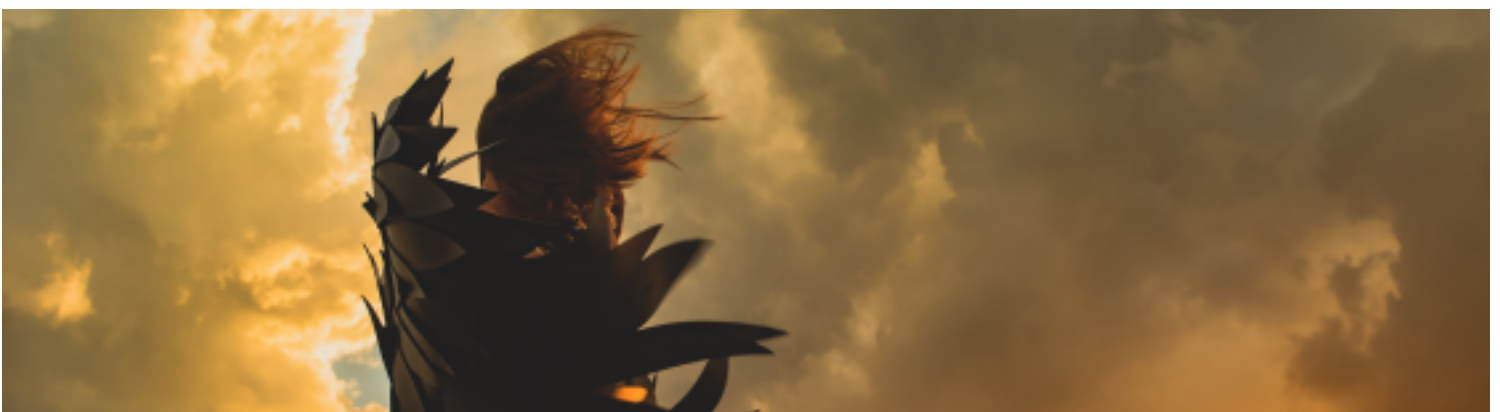
ost like smoked chestnut kernels with vermilion spots of ashes, not set on me, but the sky full of stars. I often dream about lions, even though I've never seen one in real life.

But what does it mean? What do dreams mean? Are they just endless reels of our thoughts? Are they just the stories we create? Or are they just metaphorical "dreams" that our hearts long for?

Interesting stories can be found in cultures relating to the concept of dreams. Perhaps inspiration can be drawn from the Sng'oi people of Malaysia, who believe the dream world is real and the waking world, an illusion. Dreams are travels to the real world every night to bring back experiences to the shadow world. In small circles, sleeping next to each other, the folks would discuss the similar dreams they had, still drowsy, forgetting the pain of the shadow world. Freud would disagree. In his book 'The Interpretation of Dreams', he quotes how memories are the dream "content" and sensory stimuli feeding into dreams that are not memories, also psychic stimuli that lead to "nightmares".

The psychological peculiarity of dreams is, however, that it is something alien, with uncertain authorship. It is not something common to both the sleeping and waking world, had it been, as G. Th. Fechner states, dreams would just be "less intense" daily happenings. The distinguishable feature of dreams from the waking state is that it is visual and sensory as opposed to thoughts of the conscious psyche. A very accurate description of dreams and one that can lead to an appreciable interpretation of them is that they are the epitome of a state of powerless will, and that stands true in all senses. Often our dreams are set in our vicinity, with the characters may or may not being familiar, scenarios may or may not being real, but one thing for sure is prevalent—a state out of the dreamer's control. One where the burden of decision-making has been lifted off of him. Is it a free state of less power or heavy state of powerlessness? Whether or not this pondering is fruitful, it sure is an escape. Our thoughts of worry from such nightmares or joy from dreams can often lead us to analyze our lives and guide us in the right direction.

Whatever they may be, I wish the reader seldom remembers them and focuses on chasing his "dreams" instead, and when he does remember them, he need not bother hitting the alarm to wake up and write an article like this!



# NARRATIVE



# NEST

# THE POWER OF SPORTS IN LEADERSHIP

-VIKASH (2021UGME042)

Have you ever considered how sports could be the secret to becoming a better leader?

As a workaholic entrepreneur, I used to believe that every free moment should be spent advancing my business. This drive, while rooted in passion, led me straight towards burnout. It wasn't until I encountered a list of "pre-burnout" signs, many of which applied to me, that I began to recognize the gravity of my situation.

A conversation with friends confirmed what I had feared—I was on the path to burnout. This realization led me to explore solutions that could restore balance and enhance my leadership capabilities.

One of the most effective strategies I discovered was incorporating

sports into my routine. Here's how engaging in physical activity has become a cornerstone of my leadership development and well-being:

## 1. Sports Enhance Mental Clarity

The research underscores the cognitive benefits of regular exercise. According to a study published in *The Journal of Clinical Psychiatry*, physical activity improves mental clarity by increasing blood flow to the brain, which enhances cognitive functions and reduces stress levels. For me, running in nature without any distractions like music or podcasts became a meditative practice. This "mental space" allowed me to process thoughts more clearly and approach problems with a fresh perspective.

## 2. Boosted Performance and Productivity

Engaging in sports not only clears the mind but also boosts overall performance. A study from *The American Journal of Lifestyle Medicine* found that regular physical exercise leads to improved productivity and energy levels. By incorporating a daily run into my routine, I noticed a significant increase in my focus and productivity. Sports helped me manage stress better and approach tasks with renewed energy and efficiency.

## 3. Creating a Sense of Belonging

Sports foster a sense of camaraderie and teamwork, which is crucial for effective leadership. *The Journal of Sport & Exercise Psychology* highlights that team sports, in particular, enhance interpersonal skills and build strong, supportive relationships among team members. When participating in group sports or activities, leaders can experience first-hand how shared goals and challenges can forge stronger bonds and improve team dynamics. This sense of belonging and mutual support is essential for leading a cohesive and motivated team.

## 4. Building Resilience and Emotional Intelligence

Participating in sports teaches valuable lessons in resilience and emotional intelligence. *The Harvard Business Review* reports that athletes often display higher levels of emotional intelligence, including self-regulation, empathy, and social skills. My experience with sports has helped me develop a more resilient mindset, enabling me to handle setbacks and challenges with greater composure and empathy.

## 5. The Leadership Lessons from Sports

Sports offer numerous lessons that are directly applicable to leadership. From setting goals and maintaining discipline to learning from failures and celebrating successes, the principles of sports can be transferred to professional life. *The Journal of Leadership & Organizational Studies* emphasizes that leaders who engage in sports often exhibit stronger leadership qualities, including improved decision-making and team management skills.

## Conclusion: Embrace Sports for Better Leadership

Incorporating sports into your daily routine can transform your leadership abilities by enhancing mental clarity, boosting performance, fostering team cohesion, and building resilience. As leaders, it's crucial to recognize the value of physical activity not just for personal well-being but also for professional growth. By prioritizing sports, you can achieve a more balanced, effective, and fulfilling leadership journey.



# GROWING SPORTS MARKETING INDUSTRY

-APOORVA JAIN (2023UGEE085)

The global sports marketing industry surpassed a value of over USD 484 billion in 2023 and is anticipated to pass USD 651 billion by 2028 (The Business Research Company, 2024). The advancement of technology (virtual reality), increased interest in sports, and wearable technology have accelerated the growth of this industry.

## The Sports Marketing Industry in North America

In 2023, North America became the largest sports marketing region in the world accounting for over USD 169 billion or 35% of the 2023 total market value (The Business Research Company, 2024). North America is home to some of the most famous sports leagues in the world, the NBA, MLB, NFL, NHL, WNBA, MLS, etc. With that in mind, the North American sports marketing industry is one to keep a close eye on with the rapid growth anticipated in the next decade.

This industry comprises of multiple revenue sources such as partnerships, merchandising, ticket sales, and media rights.

## Partnerships

Partnerships are when a team partners with an organization to increase brand awareness and generate more value for both brands. Generally, sports teams that share similar values and initiatives with other organizations will team up for a partnership. An example of this would be the Toronto Blue Jays and McCain, who sell crispy fresh fries to fans every Friday at home games, which provides an incentive for fans to attend these home games and increases brand awareness for both organizations.



The global sports marketing industry surpassed a value of over USD 484 billion in 2023 and is anticipated to pass USD 651 billion by 2028 (The Business Research Company, 2024). The advancement of technology (virtual reality), increased interest in sports, and wearable technology have accelerated the growth of this industry.

## The Sports Marketing Industry in North America

In 2023, North America became the largest sports marketing region in the world accounting for over USD 169 billion or 35% of the 2023 total market value (The Business Research Company, 2024). North America is home to some of the most famous sports leagues in the world, the NBA, MLB, NFL, NHL, WNBA, MLS, etc. With that in mind, the North American sports marketing industry is one to keep a close eye on with the rapid growth anticipated in the next decade.

This industry comprises of multiple revenue sources such as partnerships, merchandising, ticket sales, and media rights.

## Partnerships

Partnerships are when a team partners with an organization to increase brand awareness and generate more value for both brands. Generally, sports teams that share similar values and initiatives with

other organizations will team up for a partnership. An example of this would be the Toronto Blue Jays and McCain, who sell crispy fresh fries to fans every Friday at home games, which provides an incentive for fans to attend these home games and increases brand awareness for both organizations.

## Merchandising

Merchandising can be done in two ways. The sports team can decide to license their logo (depending on the league) to another business to create products with their team's

logo. The second way can be the team selling merchandise of their own (ex. jerseys, footwear, shirts, sports equipment, etc.) at venues/stadiums, online, or licensed retailers. In 2023, the market size for sports merchandising surpassed USD 35 billion and is anticipated to reach approximately USD 57 billion by 2033 a 5% increase (Future Market Insights, 2023).

### **Ticket Sales**

To drive ticket sales and generate more revenue, the ultimate goal is to create exceptional experiences for new and current fans allowing them to feel more engaged at the games, building long-term loyalty to the team. Fan engagement is a key contributor to increased ticket sales. The transition to digital tickets has made it seamless, quick, and easy for fans to scan their tickets from their device without the need to print or have a physical ticket. In addition, digital tickets have provided fans with peace of mind against counterfeit tickets making it easier for both the fan and the organization.

### **Media Rights**

Media rights are rights given to media/television organizations to broadcast the team's games/events on television. According to Statista, the value of sports media rights hit USD 56 billion globally in 2023, compared to \$54.7 billion in 2022 (2024). This is an excellent source of revenue generation for sports teams. In addition, with the advancement of virtual reality gadgets, it will be interesting to see how media rights will be assigned in the upcoming years.

### **Sports and Entertainment in Canada**

The most well-known sports marketing company in Canada is Maple Leafs Sports & Entertainment (MLSE), who own the Toronto Raptors, Maple Leafs, TFC, TFC II, Argonauts, Marlies, Raptors 905, Raptors Uprising Gaming Club, and the TFC in the eMLS cup. MLSE is a premier sports and entertainment company with strong global recognition operating out of the Scotiabank Arena while owning the Coca-Cola Coliseum, BMO Field, BMO Training Grounds, OVO Athletic Centre, and the Ford Performance Centre (MLSE, 2024).

The only Toronto sports team that MLSE does not own is the Toronto Blue Jays. The Toronto Blue Jays are the only Canadian baseball team and are owned by Rogers Communications. I love watching the Blue Jays and have been a fan since 2006. At the age of 8, I began to play baseball and attended many games at the Rogers Centre, which was the first stadium to have a retractable roof allowing fans to enjoy games in any weather condition. The Toronto Blue Jays have won two back to back World Championships in 1992 and 1993, 2 American League Championship Series pennants (ALCS), and 6 American League East Championships titles (ALDS).

Although sports marketing is a very niche industry, it is a rapidly growing one with great advancements and improvements being made globally. Even though it is already big in North America, this industry will continue to grow for generations to come. With the expansion of the WNBA into Toronto, the future is bright for Canada to be the home of more sports teams. The energy fans bring in Canada is unmatched, and it will be exciting to see what the future holds. For now, we cheer on our Toronto teams no matter how many times they lose in the first round of playoffs.



# A Brief History on How Bangalore Became the IT Hub of India

“

-AANCHAL SIKARWAR (2022UGEC004)

*We need to go back 113 years to the year 1909 (Today it's 14th April 2022), a pivotal moment in India's scientific and technological journey. Bangalore was carefully chosen as the ideal location for establishing higher education and research in science and engineering, with the institute that would become a beacon of innovation: the Indian Institute of Science (IISc). This visionary initiative was made possible through the remarkable collaboration between the industrialist Jamsetji Tata and the progressive Maharaja of Mysore, who recognized the potential of creating a world-class research institution in the heart of South India. Their collective vision went beyond mere infrastructure; they were laying the groundwork for a technological ecosystem that would transform not just Bangalore, but potentially the entire nation's scientific landscape.*

*The establishment of IISc attracted numerous research institutions over subsequent decades, creating a magnetic pull for scientific talent and innovative thinking. One such notable institution was the Raman Institute, established in 1940, which was initially a private institute founded by the legendary physicist CV Raman and subsequently supported by the Government of India. By the 1930s, Bangalore had already emerged as a significant hub for electrical manufacturing, symbolized by landmark developments like the Mysore Lamps, initiated by the forward-thinking Maharaja of Mysore. A remarkable testament to the city's progressive spirit was the lighting of Asia's first street electric light in Bangalore in 1905, a moment that symbolized the city's early technological ambitions and its potential for future innovations.*

*This technological momentum was not a mere coincidence but a result of strategic planning, visionary leadership, and a conducive ecosystem that nurtured innovation. The city's unique geographical and climatic advantages played a crucial role in attracting scientific and industrial establishments. Located away from international borders and blessed with a pleasant climate, Bangalore offered a stable and comfortable environment for researchers and industrialists. The supportive government policies, coupled with the entrepreneurial spirit of local leaders and industrialists, created a perfect breeding ground for technological enterprises. From the establishment of critical organizations like Hindustan Aeronautics Limited (HAL) in 1940 to the later emergence of information technology giants like Infosys and Wipro, Bangalore consistently demonstrated its capacity to be at the forefront of India's technological revolution, transforming from a quiet administrative city to a global technological powerhouse.*





*The City always had the history of supporting the entrepreneurial ecosystem from ages. This brought the new skills to the city as always. Also the market has always been positive, added to this was the climatic conditions of the city which is pleasant .*

*In 1940 Walchand Hirachand in association with Maharaja of Mysore established HAL - Hindustan Aeronautics Limited. Post Independence Govt of India established many Technical Organisations in Bangalore. Given the security condition that Bangalore being away from International Borders and seashore, added to the climatic conditions this gave a strategic advantage in comparison to other cities. The below industries even today own large campuses which are literally bigger than any private IT giants in Bangalore. Also the Bangalore city has named many residential layouts basis some the below organisation names.- ITI layout, HAL Layout, BEL Layout, BEML Layout, NGEF, MICO Layout..*

*Chronology of some of Engineering companies estd after 1940's*  
*HAL - Hindustan Aeronautics Limited - Estd in 1940*  
*ITI - Indian Telephone Industry - Estd in 1948*  
*BEL - Bharat Electronics Limited - Estd in 1954*  
*NAL - National Aerospace Laboratories – Estd in 1959*  
*ADE - Aeronautical Development Establishment - Estd in 1959*  
*GTRE - Gas Turbine Research Establishment - Estd in 1959*  
*CPRI - Central Power Research Institute -Estd in 1960*  
*BEML - Bharath Earth Movers Limited - Estd in 1964*  
*ISRO - Indian Space Research Organisation -Estd in 1969*  
*By 1961 Private Players Mico Bosch had 2000 employees in Bangalore Plant*

*When one city has so many engineering and technological industries, obviously it attracts a talent pool. As birds of same feather flock together, the inflow of private players also started in 1970. The 1970's saw National Policy of Promotion of Small and Medium Enterprises which led to small industries being set-up. This forged the outsourcing models between small and large industries. This same policy was instrumental in setting up the Electronic City in 1978. By 1980's the city saw the emergence of Infosys, Wipro and many other companies.*

*The Economic liberalization of India in 1990's saw many IT companies emergence. On 1st Nov 1998 ITPL was Inaugurated. The Rest is History how the Bangalore is developed.*

*Now that there is legacy and history for the Technological companies in Bangalore, it's wrong to state that evolution of IT started in 2000's. The IT evolution of Bangalore has a history of more than a century.*

# WEALTH



# WISE

# WASH TRADING: A DEEP DIVE INTO MARKET MANIPULATION

-DIVYANSHU PRASAD SOUMYA  
(2021UGME029)

## What is Wash Trading?

Wash trading is a form of market manipulation where an investor simultaneously buys and sells the same financial instruments to create misleading, artificial activity in the marketplace. This deceptive practice inflates trading volumes, potentially misleading other investors about the liquidity and true value of a security.

Wash trading refers to a deceptive and illegal trading practice in which a trader executes buy and sell orders simultaneously for the same financial instrument to manipulate markets. Essentially, wash traders are trading with themselves to create the artificial appearance of substantial market demand that can lure other participants into entering trades.

At its core, Wash trading generates volumes and volatility that are not real. By taking both sides of trades, wash traders give the illusion of liquidity and price movement when in fact one individual or colluding group is behind the activity. This market manipulation is extremely problematic because it:

- Distorts true supply and demand dynamics
- Obscures the real market volatility and volume
- Falsely signals to other traders that certain price levels are appropriate
- Allows wash traders to reap profits from their deception
- Compromises market transparency and integrity

The wash trader is hoping to influence other buyers and sellers by portraying market conditions that are detached from reality. These phantom trades in turn impact broader market activity as participants are misled into entering or exiting positions based on misperceptions. Thus, Wash trading jeopardizes efficient and equitable price discovery within financial markets.

## Example of Wash Trading

Consider an investor, Alex, who owns a large quantity of a particular stock, XYZ Corp. Alex wants to create the illusion that XYZ Corp. is actively traded to attract other investors and drive up the stock's price. To do this, Alex sets up two brokerage accounts. From Account A, Alex sells 1,000 shares of XYZ Corp., and, almost simultaneously, from Account B, Alex buys those same 1,000 shares. This transaction does not change Alex's overall position in XYZ Corp., but it falsely increases the trading volume and potentially the stock's price.

## Why Wash Trading is Manipulative?

Wash trading is manipulative for several reasons:

1. **False Market Activity:** It creates the illusion of high demand or heavy trading activity, which can mislead other investors.
2. **Price Manipulation:** By creating a false perception of increased activity, it can artificially inflate or deflate the price of a security.
3. **Market Integrity:** It undermines the integrity of financial markets, leading to a loss of trust among investors.



4. **Misleading Information:** It provides false information about the liquidity and performance of a security, which can distort market analysis and decision-making.

## Who Engages in Wash Trade and Why?

Wash trading is undertaken by traders seeking to manipulate markets for their benefit. Specific parties known to use wash trades include:

- **Dishonest Individual Traders** - Traders may create wash sales in hopes of triggering buying or selling pressure from other participants, allowing the wash trader to quickly close their position at a profit. They essentially aim to "fool" others into reacting to false signals.
- **Market Makers** - Occasionally, market makers might wash trade to portray stronger liquidity in their market that can attract other traders. More volume gives the appearance of a robust, active market.
- **Fund Managers** - Some fund managers have conducted wash trading to boost returns through fictional transactions, attempting to attract more investors and assets under management.
- **Brokers** - Less scrupulous brokers potentially engage in wash trading to seem more competitive. By inflating their volume and activity through wash trades, brokers can posture as a preferable option relative to alternatives.

The unifying motive is plain dishonesty - parties see an opportunity to use deception to their advantage to generate profits or credibility. Ultimately, wash trading betrays principles of transparent and ethical participation in financial markets. The behavior squanders public trust in capital markets.

## Regulations Against Wash Trading:

To maintain market integrity, various regulatory bodies around the world have stringent rules against wash trading. In the United States, the Securities and Exchange Commission (SEC) and the Commodity Futures Trading Commission (CFTC) have clear prohibitions against this practice. The European Securities and Markets Authority (ESMA) enforces similar regulations in the European Union. Violations can result in severe penalties, including fines, suspension, and even imprisonment.

## Procedure to Review Wash Trading Alerts

Financial institutions use sophisticated surveillance systems to detect potential wash trading. The procedure typically involves several steps:

- **Automated Detection:** Surveillance systems flag suspicious transactions based on predefined criteria, such as simultaneous buy and sell orders for the same security by the same trader.

# THE 50-30-20 RULE : A SIMPLE GUIDE TO PERSONAL FINANCE BUDGETING

-FAIZAN AHMED (2021UGME006)

Managing personal finances can be a challenging task, especially for those who are just starting their financial journey. However, a simple and effective budgeting strategy known as the 50-30-20 rule (or "The Personal Budgeting Rule") can help individuals allocate their income in a balanced and sustainable way. As the Hindi saying goes, "Waise Naam Me Kyaa Rakha Hai" (What's in a name?) - it's the principle behind this rule that matters most.

The beauty of this rule lies in its simplicity and adaptability across different income levels. It divides your after-tax income into three main categories: 50% for needs, 30% for wants, and 20% for savings and debt repayment. This straightforward approach makes it easier for people to maintain control over their finances without getting overwhelmed by complex budgeting systems.

Let's break down each category in detail. The 50% allocated for needs encompasses essential expenses that you must pay to maintain basic living standards. This includes rent or mortgage payments, utility bills, groceries, basic transportation costs, healthcare expenses, and minimum debt payments. These are non-negotiable expenses that ensure your basic survival and well-being.

The 30% portion designated for wants covers discretionary spending – the things that make life more enjoyable but aren't absolutely necessary. This category includes entertainment, dining out, shopping for non-essential items, hobbies, gym memberships, streaming services, and vacation funds. Having a dedicated portion for wants acknowledges that enjoying life is important for long-term financial sustainability and prevents the feeling of deprivation that often leads to budget abandonment.

The final 20% is perhaps the most crucial component, dedicated to building financial security through savings and debt repayment beyond minimum payments. This includes emergency fund contributions, retirement savings, investments in stocks or mutual funds, and aggressive debt reduction. This category helps build long-term wealth and provides a financial buffer for unexpected expenses or opportunities.

What makes this rule particularly effective is its flexibility. During challenging financial times, you can adjust the percentages slightly while maintaining the basic framework. For instance, if you're facing high debt, you might reduce your wants to 20% and increase savings/debt repayment to 30%. Similarly, in expensive cities where housing costs are high, you might need to allocate 60% to needs and reduce wants to 20%.

The rule is especially valuable for young professionals and those early in their careers. By implementing this system early, they can develop healthy financial habits that will serve them well throughout their lives. The consistent 20% allocation to savings and debt repayment can lead to significant wealth accumulation over time, thanks to the power of compound interest.

Moreover, this budgeting approach helps create a healthy relationship with money by acknowledging that both saving and spending have their place. It eliminates the guilt often associated with spending on wants by giving explicit permission to use 30% of income for enjoyment, while ensuring that essential needs are met and future financial security isn't compromised.

For those struggling with debt, the 20% savings category can initially focus more on debt repayment. As debts are paid off, this portion can gradually shift toward savings and investments, creating a clear path toward financial freedom. The rule thus serves as both a practical budgeting tool and a roadmap to long-term financial success.

- Initial Review: Compliance officers review the flagged transactions to assess whether they genuinely indicate wash trading or if there might be a legitimate explanation.
- Investigation: A deeper investigation is conducted if the initial review raises concerns. This may involve reviewing trading patterns, communication records, and the trader's history.
- Reporting: If the investigation confirms wash trading, the incident is reported to regulatory authorities as required by law.

## Actions to be Taken by the Company

When a company identifies potential wash trading, it must take decisive actions to address and prevent further occurrences:

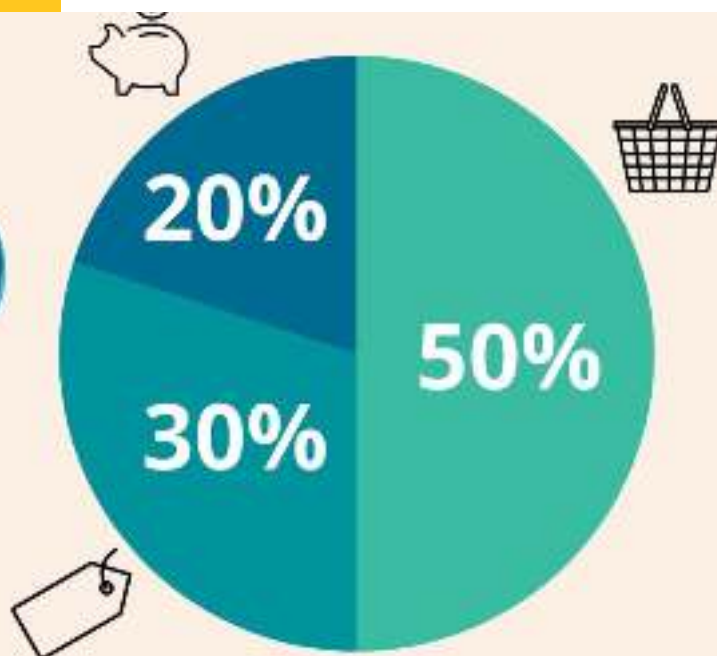
- Immediate Cease of Activity: Stop suspicious trading activity immediately to prevent further market manipulation.
- Internal Investigation: Conduct a thorough internal investigation to understand the scope and details of the wash trading.
- Employee Discipline: If employees are found to be involved, enforce appropriate disciplinary actions, which could range from warnings to termination.
- Regulatory Reporting: Report the incident to relevant regulatory bodies, detailing the findings of the internal investigation and actions taken.
- Policy Review and Enhancement: Review and strengthen internal policies and controls to prevent future occurrences. This might include enhanced surveillance, stricter compliance protocols, and employee training.
- Ongoing Monitoring: Implement ongoing monitoring and periodic audits to ensure compliance with anti-manipulation regulations.

## Conclusion

Wash trading is a serious offense that undermines the integrity of financial markets. Understanding its mechanics, recognizing its manipulative nature, and adhering to regulatory standards are crucial for maintaining a fair and transparent market environment. Companies must be vigilant in detecting and addressing such activities to protect investors and uphold market integrity.



# 50/30/20 RULE



If you implement this rule effectively, then The 8th wonder of the world will work for you. (Trust me, I'm not joking! I'm talking about "THE POWER OF COMPOUNDING...!!!")

Let's find out everything about

But, What is the 50-30-20 Rule?

The 50-30-20 rule is a budgeting method that divides your after-tax income into three main categories: needs, wants, and savings. The breakdown is as follows:

1. 50% for Needs: Half of your income should be allocated to essential expenses, such as housing, food, utilities, transportation, and insurance.
2. 30% for Wants: This portion of your income is for discretionary spending, including entertainment, dining out, shopping, hobbies, and luxuries.
3. 20% for Savings and Debt Repayment: The remaining 20% should be dedicated to saving for the future and paying off debts, such as student loans, credit card balances, or personal loans.

The main objective of implementing this rule in our financial management approach is to manage our total income (inflow of money) in such a way that you can have a controlled balance between your income and your expenditures (all the expenses including house hold and EMIs).

It's always recommended to modify this rule as your income increases, and sometimes if you feel that after fulfilling your needs, wants and savings you have extra money in your pocket. It's a perfect time to increase your savings.

If your income is rising, it doesn't mean that your needs and wants will also increase. So, as your income raises you should focus more on creating wealth and save more! Afterwards, for some people 50-30-20 becomes 40-30-30 or 40-20-40 or 30-20-50 too!!

That's awesome! Isn't it? What do you think of this? Let me know your thoughts...!! (I'm curious and interesting to discuss about)

Benefits of the 50-30-20 Rule

The 50-30-20 rule offers several advantages for those looking to manage their finances effectively:

1. **Simplicity:** The rule is easy to understand and implement, making it an excellent starting point for those new to budgeting.
2. **Flexibility:** While the percentages serve as guidelines, they can be adjusted based on individual circumstances and financial goals.
3. **Balance:** By allocating funds to needs, wants, and savings, the rule promotes a balanced approach to financial management, ensuring that all aspects of life are considered.
4. **Long-term financial health:** Consistently saving 20% of your income can help build an emergency fund, invest for retirement, and reduce debt over time.

Let me tell you a fact, that there are much more benefits of using the 50-30-20 rule. I know, right now you won't believe me. But trust me, mark my words that it creates a huge impact in long term. Because of THE POWER OF COMPOUNDING!

Here's the bookish definition of THE POWER OF COMPOUNDING! (I'm sure you know about this..!)

Power of compounding is essentially an act of 'adding interest on interest,' i.e. the amount of money you invest will generate earnings from both the initial principal amount and the accrued earnings from preceding compounding periods.

In simple words, as early as you start investing money, than your invested amount will have much higher returns!

Implementing the 50-30-20 Rule

To start using the 50-30-20 rule, follow these steps:

1. **Calculate your after-tax income:** Determine your total income after deducting taxes, as this is the amount you will be working with.
2. **Categorize your expenses:** Review your spending and categorize each expense as a need, want, or savings/debt repayment.
3. **Adjust your spending:** If your current spending does not align with the 50-30-20 split, make adjustments by reducing wants or finding ways to lower the cost of your needs.
4. **Track your progress:** Regularly monitor your spending and

make changes as needed to ensure you are staying within the recommended percentages.

While the 50-30-20 rule may not work for everyone, it serves as an excellent foundation for developing a personalized budget. By prioritizing needs, managing wants, and dedicating funds to savings and debt repayment, individuals can work towards achieving their financial goals and building long-term financial stability.



## ARMCHAIR SCIENCE

-AVANI GUPTA (2023UGCS006)

You must believe in epistemic magic to believe that sitting in an armchair gives you knowledge of the world. Thought experiments are a good way to produce knowledge by stepping out of the domain of real and day-to-day affairs. They can be seen as an instrument of judgment of possibility and consideration of conceivability. However, they are constrictive, and arbitrarily cut off and restrict the range of choices available to decide on a course of action. Thought experiments are a great tool to assess, tinker, and work up solutions to important and rather, impossible questions but in particular they distance us from the consequences, that is, making it remote to the action that the 'thinker' will take, thereby it is difficult to assess from a practical point of view whether the thought experiment is of any significance or not. The thinkers agree that thought experiments, like real experiments, can be flawed; only some truly offer a glimpse into nature's inner workings. But here, too, famous engineer Norton, who laid the most effective foundation for modern data transfer and communication, has a strong opinion: 'If thought experiments are "Platonic perception", then tell me, how do I know which is the good one and which is the bad one? "

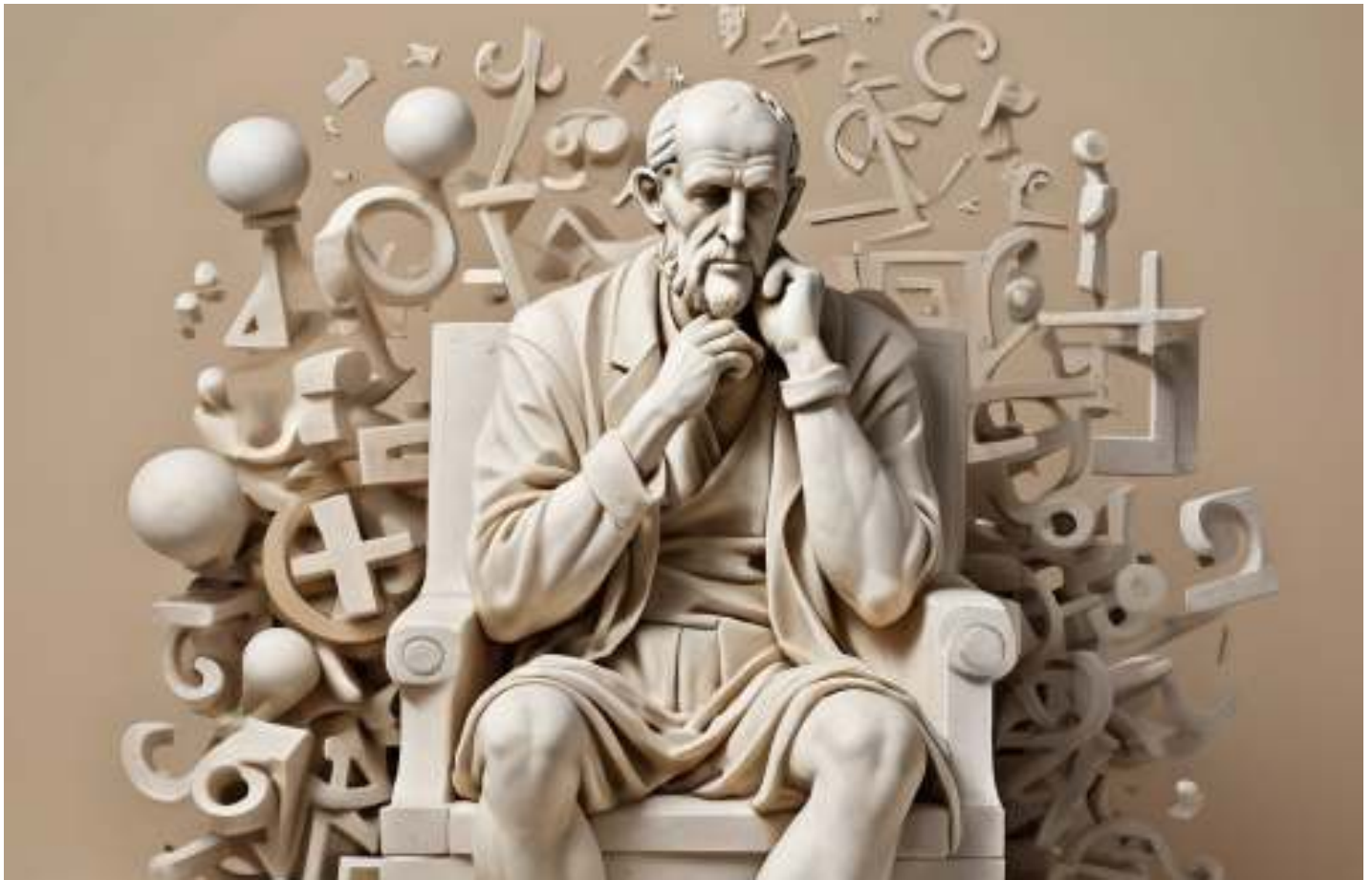
Most often thought experiments are communicated in narrative form, frequently with diagrams. It is important to distinguish between the imagined scenarios that are featured in thought experiments, on the one hand, and the narratives that establish the scenarios in people's minds, on the other. Once a scenario is imagined it may assume a life on its own, and this explains partly the creative power of a good thought experiment. Experimental results may obtain that run counter to the narrative that initiated the discussion of an imagined scenario. Besides, thought experiments should be distinguished from thinking about experiments, from merely imagining any experiments to be

conducted outside the imagination, and from psychological experiments with thoughts, though there may be some overlap. They should also be distinguished from counterfactual reasoning in general, as they seem to require an experimental element, which explains the impression that something is experienced in a thought experiment (i.e., being seen, felt, heard, etc.; not literally, of course).

Our ideas are more easily and readily at our disposal than physical facts. We experiment with thought, so as to say, at little expense. It shouldn't surprise us that, often time, the thought experiment precedes the physical experiment and prepares the way for it. A thought experiment is also a necessary precondition for a physical experiment. Every inventor and every experimenter must have in his mind the detailed order before he actualizes it. Thought experiments have been an integral part of philosophy since ancient times. This is in part due to philosophical hypotheses often being subjective and impossible to prove through empirical evidence. Philosophers use thought experiments to convey theories in an accessible manner.

To illustrate a particular concept (such as free will or mortality), philosophers explore imagined scenarios. The goal is not to uncover a 'correct' answer but to spark new ideas. Galileo was the first great master of the thought experiment; Albert Einstein was another. In one of his most celebrated thought experiments, Galileo shows that heavy objects and small objects must fall at the same rate. On another occasion— building on the ship's mast argument— he deduces the equivalence of reference frames moving at a constant speed concerning one another (what we

now call Galilean relativity), a cornerstone of classical physics. Einstein, too, was adept at performing such imaginative feats in his head. As a young man, he imagined what it would be like to run alongside a beam of light, and it led him to special relativity. Later, he imagined a falling man, and realized that in freefall one doesn't feel one's own weight; from this insight, he concluded that acceleration was indistinguishable from the tug of gravity.



This second breakthrough became known as the 'Principle of equivalence', and led Einstein to his greatest triumph, the general theory of relativity. Imagine this: You are on a bridge overlooking a set of trolley tracks and you notice that five people have been tied down to the tracks by a devious (and presumably moustache-twirling) villain. Then you see an out-of-control trolley barreling down the tracks, which will certainly kill the unfortunate people unless someone intervenes. Oh no!

*But*, at that moment, you realize that you are sharing your bridge with a gigantic fat man, who—if you were to push in front of the trolley—would have enough girth to stop the trolley and save the five bound people, though he will certainly be killed. (In this scenario, you are too skinny to stop the trolley.) You are now faced with the following options: 1) Do nothing and the five people will die, or 2) Push the fat man in front of the trolley and sacrifice him for the five people. In either scenario, are you at all culpable in these innocent people's deaths? Should the law make any distinction? This question is of very immediate concern as we share roads and highways with an increasing number of driverless vehicles.

And, to be sure, these vehicles (or rather, their software developers) will face similar scenarios, but ones in which the outcomes will be far from as certain as they are in the original problem. Should a driverless car lunge into another lane in order to avoid a small child who just ran into the street? Should it do a full-quick stop to avoid hitting a galloping deer knowing there is a speeding car right behind it? Do these decisions change if the driverless vehicle happens to be a prison bus transporting convicted murderers, or perhaps an ambulance with a pregnant woman heading to the hospital to give birth to twins?

If someone is killed or injured in these scenarios, who should be held accountable? This is one of those times when problems descend from the clouds to the surface. Even if the technology isn't here quite yet, it couldn't hurt to start talking about it. What these examples have in common is that knowledge seems to arise from within the mind, rather than from some external source. They require no laboratory, no grant proposal, no actual doing of anything. When we perform a thought experiment, we learn, it would seem, by pure introspection.

'Seem' is perhaps the key word. Whether thought experiments actually do present a challenge to empiricism is hotly contested. In other words, although the world is full of physical stuff, occupying space and persisting over time, some truths about the physical world have a very un-physical flavour. They resemble mathematical truths, seeming to exist outside of space and time.

# EMBRACING SOLITUDE: NAVIGATING LIFE'S JOURNEY AS AN ONLY CHILD

GIPASHU (2021UGEC079)

In the tapestry of my life, the threads of sibling bonds have remained noticeably absent. Thinking about the unknown world of being an only child unveils a complicated tale filled with both loneliness and self-improvement. I have not shared the typical experiences of sibling relationships; instead, my path has been defined by the sound of my own footsteps. The absence of siblings made me think about how those relationships could have affected my personal growth, leading me to reflect on the fabric of my life.

Not having any siblings while growing up has nurtured a deep feeling of independence and self-sufficiency within me. Since a young age, I became skilled at navigating through the unfamiliar territory of being alone, finding comfort in my own thoughts and presence. This solitude, although empowering, also revealed an undiscovered world, a realm of connections and shared moments that I could only witness from a distance. The lack of siblings became the defining aspect of my personal journey, molding the shape of my emotional experiences.

Brotherly or sisterly connections are a mix of friendship and competition that changes as time goes by. The bond between siblings, built on shared experiences and growth together, offers a strong support network that goes beyond just family. Without a sibling to confide in, I've had to find comfort and empathy in friendships and other family relationships. Being alone has made me more self-reliant, but it has also highlighted the significance of forming meaningful relationships with others to fill the gap left by not having a sibling.

Facing life's obstacles without the support of siblings has led me to rely on myself and become stronger. While siblings usually provide companionship during tough times, I have learned to navigate challenges alone. Not having a sibling to confide in has forced me to become more self-aware and emotionally intelligent as I deal with life's ups and downs.

The bond between siblings is strengthened by the memories they share. Childhood adventures, teenage challenges, and adult achievements are all part of the shared history that connects siblings. As someone without siblings, I often think about how my life would have been different with a brother or sister. However, not having siblings has allowed me to appreciate and build meaningful relationships with friends and extended family, creating my own unique story.

In conclusion, not having siblings has brought both solitude and self-discovery into my life. Although I don't fully understand the dynamics of sibling relationships, I embrace the richness of my own journey. Being an only child has taught me to be independent, resilient, and to seek meaningful connections beyond my immediate family. As I navigate through life, I understand that everyone's journey is a unique combination of relationships, contributing to the intricate and beautiful mosaic of human experience.



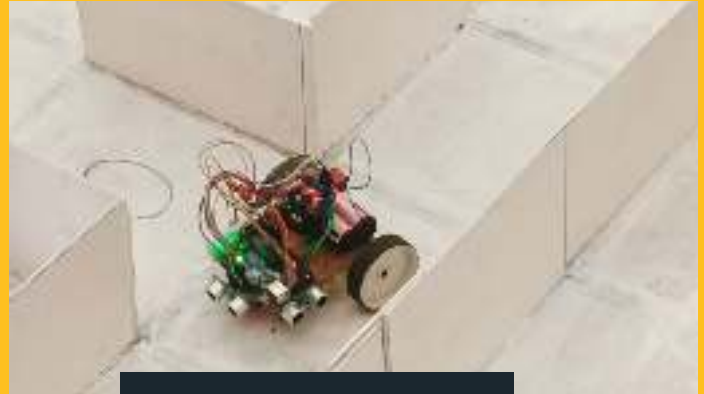
# STUDENT



# ACTIVITIES

# FESTS

**OJASS**, the annual techno-management fest of NIT Jamshedpur, is a three-day enthusiastic exposition event featuring activities in technology, management, quizzing, gaming, filmmaking, photography, robotics, and more. It attracts students from various institutes, including many IITs and NITs.



**OJASS**



**CULFEST**

**CULFEST**, the institute's annual cultural festival, is a prestigious national-level event celebrating art, creativity, and cultural diversity. The festival features dance performances, vocal competitions, fine arts exhibitions, photography, and filmmaking, culminating in Pronites, that transform the event into a true cultural spectacle.

**URJA**, NIT Jamshedpur acknowledges the importance of sports in fostering camaraderie among students. URJA, the sports and athletics events at the institute, provide a wonderful experience for students. Dedicated teams for cricket, hockey, football, chess, and more compete in Inter-Branch Sports tournaments annually.



**URJA**

# SPORTS

## BASKETBALL TEAM



## CHESS TEAM



# SPORTS

## VOLLEYBALL TEAM



## FOOTBALL TEAM



# SPORTS

## CRICKET TEAM



## HOCKEY TEAM



# SPORTS

## LAWN TENNIS TEAM



## ATHLETICS TEAM



# SPORTS

## BADMINTON TEAM



## TABLE TENNIS TEAM



# TECHNICAL TEAMS

## DRIFT RACING TEAM



The Drift Racing Team, NIT Jamshedpur's official Formula Student team, was established in 2009. Comprised of dedicated students from various disciplines, the team collaborates on designing and manufacturing electric race cars. They participate annually in national and international competitions. Their vehicles showcase their creativity, dedication, and meticulous work, resulting in high-performance cars.

This year, the team aims to tackle new challenges and enhance existing car models through automation and innovative ideas. They recently participated in FFS India 2022, organized by FMAE.

## DAKSH



DAKSH, NIT Jamshedpur's one of the official technical team, was founded in 2009 with the goal of designing and fabricating all-terrain vehicles. The team has consistently represented the institute at BAJA SAE INDIA, participating annually since its inception. DAKSH made its international debut in 2010.

Founded by a group of first- and second-year students, the team set out to design and construct a rugged, single-seater vehicle with off-road capabilities. On March 26, 2009, the SAE collegiate chapter of NIT Jamshedpur was inaugurated, marking the official formation of Team DAKSH. Since then, the team has been a symbol of the institute's pride and prestige, participating in 10 national and 1 international event to date.

# TECHNICAL TEAMS

## PHEONIX

The official technical team of NIT Jamshedpur, Team Phoenix, was established in 2011. Specializing in aero-modelling, the team designs and constructs radio-controlled planes and drones. They participate actively in national and international competitions like SAE India and SAE International.

Team Phoenix's achievements showcase their dedication and technical expertise. In 2018 and 2019, they secured 1st and 3rd places globally in the Design Report category at SAE International. Additionally, they consistently outperformed other Indian teams, achieving the top position from 2014 to 2016.



## REVANTA

Revanta, founded in 2009, was established by visionary students to address the issue of depleting non-renewable energy. The team focused on developing a solar electric vehicle. Through dedication and research, Revanta has achieved consistent success, winning the Electric Solar Vehicle Championship (ESVC) multiple times. Within a year, they participated in two international gasoline events, showcasing their innovation and excellence.



# TECHNICAL TEAMS

## INNOREVA

Team Innoreva, NIT Jamshedpur's official IoT team, was founded in 2018. Specializing in IoT, Robotics, Web/App Development, and Machine Learning/AI, the team focuses on research and developing innovative solutions to real-world challenges.

Team Innoreva believes the future of technology lies in the convergence of different fields and is committed to leading advancements in this area. Their innovative projects have garnered recognition and awards, solidifying their position as a leading force in the field of IoT and related technologies. By combining their technical expertise with a passion for innovation, Team Innoreva continues to push the boundaries of what is possible in the realm of technology.



## PCON

Founded in 2017, the Programming Club of NIT Jamshedpur (PCON) is dedicated to fostering a dynamic and competitive environment within the college community. The club's primary mission is to cultivate a technical culture centered around programming and development, with a strong emphasis on passing down knowledge to successive generations. This approach creates a valuable chain of knowledge transfer, enriching the educational experience.

PCON remains active throughout the year, organizing a diverse range of events designed to enable students to explore various domains within the field of Computer Science. These experiences not only broaden students' intellectual horizons but also assist them in discovering their true passions within this expansive field.



# TECHNICAL TEAMS

## RAYS

**Team RAYS**, a student-led initiative, aims to develop advanced, indigenous solar vehicles. They believe fostering curiosity among members is crucial for innovation. The team's primary goal is to create an energy-efficient passenger Solar Electric Vehicle (SEV) suitable for Indian roads. Passionate about environmentally conscious and sustainable technologies, they advocate for photovoltaic technology to meet future energy needs.

Their innovative solar vehicles have garnered recognition and awards, solidifying their position as a leading force in the field of sustainable transportation. By combining their technical expertise with a passion for innovation, Team RAYS continues to push the boundaries of what is possible in the realm of solar-powered vehicles.



## GDSC

**The Google Developer Student Club (GDSC)** at the National Institute of Technology (NIT) Jamshedpur is a dynamic community of technology enthusiasts and aspiring developers dedicated to promoting innovation and learning. Through a series of workshops, hackathons, and tech talks on various technologies such as AI, ML, web, and mobile development, the club provides its members with hands-on experience and technical expertise.

Looking ahead, GDSC NIT Jamshedpur is focused on broadening its impact by establishing collaborations with industry leaders, offering real-world project opportunities, and organizing larger events that benefit the broader community. The club's vision is to contribute to the development of the local tech ecosystem, preparing students to become future leaders in the technology industry.



# TECHNICAL TEAMS

## HORIZONS



**Team Horizons** represents the newest addition to the array of technical teams at NIT Jamshedpur. Comprising a group of dedicated individuals, the team is committed to advancing research and popularizing various domains of cosmology and space technology. Collaborating with esteemed faculty and forming an interdisciplinary network of students, Team Horizons is prepared to undertake projects that positively impact society.

The team is focused on the ambitious goal of developing and launching a satellite entirely constructed by NIT Jamshedpur students. Additionally, Team Horizons seeks to educate students about the recent achievements of ISRO and promote interest in cosmology and space technology through outreach events at local schools and colleges. The members of Team Horizons are dedicated to fostering a robust research environment within the college.

# CULTURAL CLUBS

## LITERARY AND DEBATING SOCIETY (LDS)



Founded in 1968, the **Literary and Debating Society (LDS)** of NIT Jamshedpur has been a cornerstone of campus life for over five decades. With a distinguished history of fostering intellectual development and a deep appreciation for literature and debate, LDS offers a platform for students to engage in stimulating discussions, enhance their public speaking abilities, and explore their creative talents.

Through a range of activities including debates, literary festivals, and other events, the society has played a significant role in shaping well-rounded individuals and has produced notable alumni across various fields. As it continues to evolve and inspire, LDS remains a prominent center for intellectual curiosity and expression within the NIT Jamshedpur community.

## QUNITE



Established as the Quizzing Club of the National Institute of Technology Jamshedpur, **QuNITE** embodies the enduring appeal of knowledge and competitive spirit. Since its inception, this dynamic club has served as a center for intellectual curiosity and camaraderie on campus. Through its stimulating quiz evenings, inter-college competitions, knowledge-enhancing sessions, and extensive quiz archive, QuNITE has consistently fostered the intellectual development of its members and contributed to their personal and academic growth.

The club's influence extends beyond the campus, with its alumni achieving success in various fields, underscoring the lasting impact of QuNITE as a symbol of intellectual exploration and excellence at NIT Jamshedpur.

# CULTURAL CLUBS

## AAHWAN



Dramatics is an art form that involves the enactment of stories through performance and dialogue. Historically, it has been employed to depict narratives and convey messages through the artistic contributions of individuals both on stage and behind the scenes.

**Team Aahwan**, the dramatics club of NIT Jamshedpur, has distinguished itself as a center of excellence in the art of dramatics and storytelling. The club is renowned for its innovative and impactful performances, including skits, nukkads, and mimes, which have consistently showcased the rich tradition of dramatics at the institution.

## FACES



**Team FACES**, the Fine Arts Club for Engineering Students at the National Institute of Technology Jamshedpur, serves as a vibrant forum for creativity and self-expression. Established to provide engineering students with an opportunity to explore and showcase their artistic talents, the club has evolved into a dynamic platform for imaginative and artistic exploration.

Through a variety of art exhibitions, workshops, and hands-on projects, Team FACES encourages its members to transcend the confines of engineering and engage with the visual arts. The club has been instrumental in fostering a sense of artistic community and self-discovery among students, demonstrating that those with engineering backgrounds are equally capable of creating masterpieces as they are of solving complex equations and algorithms. As Team FACES continues to inspire and develop artistic talents, it stands as a testament to the transformative power of creativity within both the academic sphere and beyond.

# CULTURAL CLUBS

## BEATBREAKERS



Dancing is a distinguished human activity, and at the National Institute of Technology Jamshedpur, **Beatbreakers** represents the sole dance club dedicated to this art form. Established in 2014, Beatbreakers has since become a prominent feature of cultural events both within the institute and at external venues, including Inter-NITs, XLRI, and Flash Mob performances. The club comprises approximately 30-40 enthusiastic members who are united by their passion for dance. Beatbreakers is characterized by its diverse expertise in various dance forms, with members actively engaging in both teaching and learning from one another. The club's contributions to the cultural landscape underscore its significant role in promoting the art of dance within the academic community and beyond.

## PHOCUS



**PHOCUS** serves as the official Photography and Film Making club of NIT Jamshedpur, where both photography and filmmaking are equally valued and enjoyed by its members. The club approaches these art forms with a deep sense of dedication, viewing photography as an essential part of their daily activities and filmmaking as a complementary pursuit. As articulated by notable figures, "This is not merely a hobby; it is our world." For individuals with a strong interest in photography and/or filmmaking, PHOCUS offers an ideal platform. The club provides practical experience in capturing images that reveal the inherent artistry within them. Membership in PHOCUS imparts valuable lessons in patience, dedication, resilience, and appreciation of beauty, even in seemingly simple photographs.

# CULTURAL CLUBS

## ROOH



**Team ROOH**, true to its name, embodies the genuine and soulful spirit of its close-knit community. The team is dedicated to exploring the diverse realms of music, drawing members from various regions of the nation to create a versatile and expressive ensemble.

The club's activities encompass vibrant covers of classic compositions as well as the introduction of original works crafted by its members. As the official music team of NIT Jamshedpur, Team ROOH's success is founded on its collective mission to experience and disseminate quality music through all available mediums. The team excels in competitions and performs for faculty, embracing every facet of musical expression.

## QUOD INVICTA

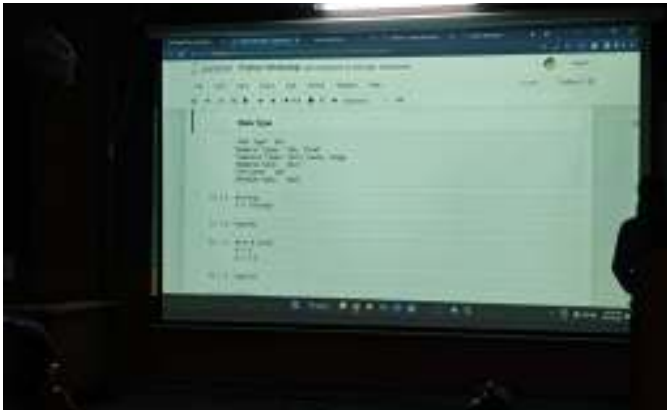


**Quod Invicta**, originally established in 2011 under the name "Invincibles" and rebranded in 2017, retains a historical connection to its predecessor through its Latin name. The organization is dedicated to transforming clothing from a mere body cover into a lifestyle statement. This transformation is pursued through innovative engineering and strategic collaborations with brands, with a focus on promoting sustainable fashion.

The team provides a dynamic platform for students to engage with and celebrate fashion, design, and lifestyle. Its activities include organizing compelling fashion shows and advocating for sustainability. What sets Quod Invicta apart is its commitment to inclusivity, welcoming students from diverse backgrounds and interests. The club fosters confident, creative, and socially conscious leaders, creating a vibrant community where passion aligns with purpose, fashion intersects with conscience, and individuality harmonizes with unity. Quod Invicta is dedicated to shaping a more stylish and sustainable world.

# TECHNICAL TEAMS

## Analytics and Consulting Club (ACC)



**The Analytics and Consulting Club (ACC)**, established in 2020, was created to address the increasing need for a platform that equips students with opportunities to enhance their skills, foster innovative thinking, and develop well-rounded personalities crucial for success in the competitive fields of analytics and consulting. Recognizing the expanding potential and abundant career prospects within these domains, ACC is committed to broadening its members' perspectives beyond traditional engineering disciplines.

The mission of ACC is to cultivate critical thinking, problem-solving capabilities, and effective communication skills. The club offers mentorship and resources to prepare its members to adeptly navigate the complexities of the modern business environment.

## SOFT SKILLS CLUB



The Soft Skills Club at NIT Jamshedpur is a distinguished institution dedicated to developing soft skills. The club's team of creative individuals offers various events, including Group Discussions, Mock Interviews, Creative Writing, Debates, Industrial Presentations, Aptitude Tests, Guesstimates, and Puzzles, to enhance students' skills. Placement Talks provide insights into the recruitment process. The club's inclusive approach ensures that all students can benefit from its events and realize their full potential.

# TECHNICAL TEAMS

## E-CELL

**E-Cell NIT Jamshedpur** is a dedicated organization committed to fostering the spirit of entrepreneurship among students. The team is driven by a profound mission to cultivate entrepreneurial skills and enthusiasm through a variety of engaging activities, including guest lectures, panel discussions, and sessions for pitching business plans and ideas. Their goal is to equip students with the necessary skills and motivation to navigate the complexities of the start-up ecosystem.

Beyond the confines of the campus, E-Cell envisions creating a broader entrepreneurial network that bridges student ingenuity with the expertise of professionals, mentors, venture capitalists, and angel investors. This vision reflects their belief that the latent potential of young minds can drive a resurgence in Indian entrepreneurship.

E-Cell NIT Jamshedpur recognizes that entrepreneurship is not merely a career choice but a mindset that encourages creativity, resilience, and the challenge of conventional norms. The organization's efforts are dedicated to inspiring, motivating, and fostering collaboration among students, thus nurturing the next generation of entrepreneurs poised to influence India's entrepreneurial landscape. In an era characterized by technological advancement, E-Cell serves as a beacon of opportunity, guiding students toward a future where their innovative ideas can transform society and contribute to national economic growth.



# UNNAT BHARAT ABHYAAN

**Unnat Bharat Abhiyan**, a flagship program of the Ministry of Human Resource Development (MHRD), aims to promote rural development in India. Launched in 2014 by Shri Prakash Javadekar, the program utilizes technical institutions to create an inclusive India.

The initiative has significantly transformed rural development by harnessing the capabilities of technical institutions to support rural areas. The National Institute of Technology Jamshedpur, inspired by this vision, has adopted five villages, committing to their betterment.



The National Institute of Technology Jamshedpur serves as the **Regional Coordinator Institute (RCI)** for the **Unnat Bharat Abhiyan (UBA)** program. As the central hub for the promotion and oversight of the UBA network, it is responsible for managing the Participating Institutes (PIs) and overseeing its own designated village cluster.

Driven by the vision of Unnat Bharat Abhiyan, the institute is dedicated to facilitating transformative changes in rural development processes. Its role involves not only supporting and coordinating the efforts of associated institutions but also actively contributing to the advancement and enhancement of the rural areas under its care.



# NATIONAL SERVICE SCHEME

**The National Service Scheme (NSS)** at the National Institute of Technology Jamshedpur exemplifies a commitment to altruism and community engagement, extending beyond traditional academic pursuits. This esteemed organization orchestrates a comprehensive range of volunteer activities, instilling a profound sense of social responsibility within its student body.

NSS at NIT Jamshedpur undertakes various initiatives, including blood donation drives, cleanliness campaigns, awareness programs, educational outreach, environmental conservation efforts, and disaster relief operations. Through these endeavors, students actively participate in transformative activities, enhancing their leadership skills, compassion, and empathy. As a result, they evolve into conscientious citizens embodying the ethos of service.

In its mission, NSS at NIT Jamshedpur contributes significantly to societal progress and empowerment, leaving a lasting impact on the community and fostering positive change.



# THE GO GREEN CLUB

**The Go Green Club**, a dynamic and purpose-driven organization, is dedicated to addressing the escalating challenge of climate change. At its core, the club is committed to raising awareness about the adverse effects of climate change and inspiring proactive measures for environmental stewardship.

The club's mission extends beyond merely educating the public. It strives to empower individuals to effect change within their own spheres of influence by promoting sustainable practices and advocating for a reduction in carbon footprints. The Go Green Club distinguishes itself through its unwavering commitment to inspiring actionable responses to climate challenges.

As a platform for education, advocacy, and practical initiatives, the Go Green Club actively engages in efforts to combat climate change. Its vision is anchored in the belief that collective action can drive significant and lasting environmental improvements. Established with the goal of identifying and implementing effective strategies for sustainable living, the club serves as a beacon of hope for a more sustainable future.

In its efforts to address environmental issues, the Go Green Club utilizes various channels, including its website, [www.gogreennitjsr.in](http://www.gogreennitjsr.in), and its social media platforms, to disseminate information and foster awareness. Through these initiatives, the club actively contributes to both environmental action and education, embodying its dedication to creating a harmonious and sustainable world.



# BRANCH SOCIETIES

## MECHANICAL ENGINEERING SOCIETY [MES]

The Mechanical Engineering Society (M.E.S.) at the National Institute of Technology Jamshedpur stands as a cornerstone in fostering the development of aspiring technocrats. The society is dedicated to enhancing both skill and knowledge among its members.

M.E.S. achieves its objectives through a diverse array of activities, including workshops, guest lectures, group discussions, and its prestigious annual event, 'COGNITIO.' These initiatives are designed to refine technical expertise and cultivate essential soft skills.

As the institute's oldest society, M.E.S. plays a crucial role in mentoring and guiding future engineers, supporting their professional growth and academic endeavors throughout their time at NIT Jamshedpur.



## SOCIETY OF ELECTRONICS AND COMMUNICATION ENGINEERING (SECE)

The Society of Electronics and Communication Engineering (SECE) is dedicated to fostering a profound interest in science and technology, with a particular emphasis on electronics and communication. Its principal objective is to provide students with industry-relevant skills and knowledge.

SECE organizes a range of events throughout the year to enable students to explore various facets of electronics and communication engineering. These include workshops on essential topics such as Competitive Programming, Arduino, IoT, and VLSI. Through these initiatives, SECE aims to enhance students' expertise and prepare them for successful careers in their field.



# BRANCH SOCIETIES

## SOCIETY OF METALLURGICAL ENGINEERING STUDENTS (SMES)

The Society for Materials and Metallurgical Engineering Students (SMES) plays a pivotal role in bridging the gap for students pursuing Materials and Metallurgical Engineering at the National Institute of Technology Jamshedpur. The society's primary mission is to explore and elucidate the relationships between material properties and their internal structures.

SMES is renowned for organizing "Technica," a premier branch festival recognized as one of the most significant events in North-Eastern India within the field. This grand event showcases the pinnacle of achievements in Materials and Metallurgical Engineering.

In addition to "Technica," SMES is dedicated to hosting a range of guest lectures and seminars. These initiatives are designed to provide students with practical problem statements and prepare them for the professional challenges they will encounter as future metallurgists



## CIVIL ENGINEERING SOCIETY (CES)

Civil Engineering Society (CES) stands as a prominent group of enthusiastic civil engineering students affiliated with the esteemed Department of Civil Engineering at the National Institute of Technology Jamshedpur. CES operates with the core values of solidarity, brilliance, endurance, and unwavering commitment as its guiding principles. The society is dedicated to showcasing innovative ideas and advancements in civil engineering, with the ultimate goal of making life easier and more refined. The society aspires to spread its influence far and wide, embracing new horizons.

The central philosophy of CES is encapsulated in its motto, "Keep Creating, Keep Inspiring."



# BRANCH SOCIETIES

## SOCIETY OF COMPUTER SCIENCE AND ENGINEERING (SCSE)

The Society of Computer Science and Engineering (SCSE) was established to provide a platform for enhancing skills and disseminating knowledge. Created by students from the UG CSE, PG CSE and MCA, the SCSE focuses on broadening its members' competencies beyond coding and placements, embodying the principle of being for, by, and of the students.



## ELECTRICAL ENGINEERING SOCIETY (EES)

The Electrical Engineering Society (EES) at NIT Jamshedpur is dedicated to the holistic development of students within the department. Its mission is to enhance students' academic and practical skills by providing real-world experiences and addressing technological challenges.

The society's annual branch fest, Pravardhan, exemplifies its objectives through collaborative efforts between students and faculty. Additionally, the society organizes events under "CIRCUIT HOUSE" as part of OJASS, the institute's annual techno-management festival. EES prioritizes the integration of modern technology with industry requirements, ensuring that its initiatives are in alignment with contemporary industrial needs.



# NEWS



# TIDBITS

## तीन दिवसीय उद्योग-अकादमिक सम्मेलन



ओजस'24 के अंतर्गत उद्यमिता और नवाचार पर प्रेरणादायक विशेषज्ञ वार्ता।"

**17 नवंबर, 2023** - वार्षिक तकनीकी-प्रबंधन महोत्सव, जिसमें प्रख्यात अतिथि अंकित प्रसाद और त्रिना दास ने उद्यमिता और स्टार्टअप्स पर अत्यंत प्रेरणादायक विशेषज्ञ वार्ता प्रस्तुत की। बॉबल एआई के दूरदर्शी संस्थापक अंकित प्रसाद ने वैश्विक स्मार्टफोन वार्तालापों और क्रांतिकारी नवाचारों जैसे बातचीत मीडिया मार्केटिंग पर अपने गहन विचारों से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया।



**23 से 25 नवंबर, 2023** - 23 से 25 नवंबर, 2023 तक एक सजीव तीन दिवसीय उद्योग-अकादमिक सम्मेलन का आयोजन किया। इस कार्यक्रम की शुरुआत एक रोचक परिचयात्मक सत्र और उद्घाटन समारोह से हुई, जिसने समृद्ध गतिविधियों की एक शृंखला के लिए मार्ग प्रशस्त किया। छात्रों को विभिन्न आयोजनों के माध्यम से मूल्यवान अनुभव प्राप्त हुआ, जिसमें पैनल चर्चा, व्यापारिक अवसरों पर मंथन सत्र, राष्ट्रीय आइडिया हैकाथॉन, बिजनेस टायकून, कॉर्पोरेट रोडीज़ और टीनप्रेन्योर्स शामिल थे।

## अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस समारोह 2024



**8 मार्च 2024** - राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, जमशेदपुर के अध्ययन लैंगिक समिति (GSC) ने 8 मार्च 2024 को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन किया। इस कार्यक्रम का विषय था 'महिलाओं में निवेश करें, प्रगति को तेज़ करें'। इस विशेष अवसर पर संस्थान की प्रथम महिला श्रीमती इंद्राणी सूत्रधर, माननीय निदेशक, मुख्य अतिथि डॉ. अणुरिमा वर्मा (मुख्य चिकित्सा अधीक्षक, सर्जरी विभाग), टाटा मोटर्स अस्पताल, जमशेदपुर; और विशिष्ट अतिथि श्रीमती मोनी सिन्हा उपस्थित थीं, जो टाटा स्टील, जमशेदपुर में TSL-TSUK समन्वय कार्यक्रम का नेतृत्व कर रही हैं।

माननीय श्री सुनील कुमार बर्णवाल, अपर सचिव (शिक्षा), उच्च शिक्षा विभाग, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार का दौरा।



**9 मार्च, 2024** - संस्थान ने श्री सुनील कुमार बर्णवाल के साथ एक बैठक आयोजित की। बैठक का मुख्य एजेंडा छात्र गतिविधियों, अनुसंधान पहलों और कॉलेज छात्रों के कल्याण पर केंद्रित था। चर्चाओं में सह-शैक्षणिक अवसरों को बढ़ावा देने, शैक्षणिक अनुसंधान को प्रोत्साहित करने और परिसर सुविधाओं को प्रदान करने की योजनाएं शामिल होने की संभावना है।

## एनसीसी इकाई स्थापना समारोह का उद्घाटन।

**1 अप्रैल, 2024** - एनसीसी इकाई स्थापना समारोह का उद्घाटन। इस अवसर पर हमारे विशिष्ट अतिथि, कर्नल विनय आहूजा, कमांडिंग ऑफिसर, 37 झारखंड बटालियन एनसीसी, जमशेदपुर ने अपनी उपस्थिति से कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। इस कार्यक्रम की विशेषता सीनेट बैठक से हुई। एनसीसी इकाई की स्थापना छात्रों के लिए कई लाभों का वादा करती है।



## OJASS, राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान जमशेदपुर का वार्षिक तकनीकी-प्रबंधन महोत्सव

**5 से 7 अप्रैल, 2024** - OJASS, राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान जमशेदपुर का वार्षिक तकनीकी-प्रबंधन महोत्सव, जो 5 से 7 अप्रैल, 2024 तक आयोजित किया गया, नवाचार और प्रतिभा का एक जीवंत प्रदर्शन था। इस महोत्सव में अर्ज गयल, रोडबेज के संस्थापक और सीईओ दिलखुश कुमार, लेखक और कवि नीलोत्पल मृणाल, तथा अंतरिक्ष वैज्ञानिक और उद्यमी रत्नेश मिश्रा जैसे प्रतिष्ठित व्यक्तित्वों के अंतर्दृष्टिपूर्ण अतिथि व्याख्यान शामिल थे।



## अंबेडकर जयंती का आयोजन



**14 अप्रैल, 2024** - राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, जमशेदपुर ने 14 अप्रैल, 2024 को डॉ. भीमराव अंबेडकर की विरासत का सम्मान करते हुए अंबेडकर जयंती मनाई। इस अवसर पर विभिन्न जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए गए। गणमान्य व्यक्तियों ने डॉ. अंबेडकर के जीवन और उनके योगदान पर प्रकाश डालते हुए उनके आधुनिक भारत के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित किया। छात्रों ने भाषण और कविता पाठ के माध्यम से डॉ. अंबेडकर के आदर्शों पर अपने विचार और समझ साझा कर सक्रिय रूप से भाग लिया। इस समारोह के माध्यम से, एनआईटी जमशेदपुर ने समावेशिता, सामाजिक न्याय और बौद्धिक जागरूकता को बढ़ावा देने की अपनी प्रतिबद्धता को पुनः स्थापित किया।

## नए आपराधिक सुधारों पर एक दिवसीय सेमिनार

**23 अप्रैल, 2024** - राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, जमशेदपुर के अंतर्राष्ट्रीय शिकायत समिति, अध्ययन लैंगिक समिति और राष्ट्रीय सेवा योजना द्वारा एक दिवसीय सेमिनार का आयोजन किया गया, जिसमें तीन नए आपराधिक कानूनों के गढ़े जाने की प्रक्रिया को उजागर किया गया। साथ ही, महिलाओं और बच्चों के खिलाफ होने वाले विभिन्न अपराधों के संबंध में कानूनों की प्रगतिशील प्रकृति और ई-एफआईआर, जीरो एफआईआर और इलेक्ट्रॉनिक मोड में साक्ष्य संग्रह के माध्यम से अपराध दर्ज करने में प्रौद्योगिकी के उपयोग पर भी प्रकाश डाला गया। इस सेमिनार में मुख्य संरक्षक, माननीय निदेशक प्रो. गौतम सूत्रधर, मुख्य अतिथि प्रो. टी. एन. सिंह, निदेशक, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, पटना, विशिष्ट अतिथि डॉ. सोहिनी बनर्जी, सहायक प्रोफेसर, भारतीय समाज कल्याण एवं व्यवसाय प्रबंधन संस्थान एवं विशिष्ट अतिथि एडवोकेट ममता सिंह सम्मिलित हुए।



## महिला उद्यमिता और स्टार्टअप्स के लिए संभावित पारिस्थितिकी तंत्र पर एक दिवसीय सेमिनार

**24 अप्रैल, 2024** - राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, जमशेदपुर के अनुसंधान एवं परामर्श प्रभाग और उद्यमिता विकास सेल द्वारा महिला उद्यमिता और स्टार्ट-अप्स के संभावित पारिस्थितिक तंत्र पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला का उद्देश्य महिला उद्यमियों को सशक्त बनाना, स्टार्ट-अप यात्रा में मार्गदर्शन प्रदान करना, मजबूत पारिस्थितिक तंत्र का निर्माण करना, वित्त पोषण और समर्थन तक पहुंच प्रदान करना, नेटवर्किंग और सहयोग को बढ़ावा देना था। यह कार्यशाला आकांक्षी महिला उद्यमियों, स्थापित महिला संस्थापकों, निवेशकों, उद्योग जगत के नेताओं, सरकारी प्रतिनिधियों और महिला स्टार्ट-अप्स के प्रति उत्साही लोगों के लिए लाभकारी थी।



# YEARLONG



# GALLERY

# URJA

DATE: 25 October, 2023



# 13TH CONVOCATION

DATE : 4th November, 2023





# 75TH REPUBLIC DAY

DATE : 26TH January, 2024





# ALUMNI MEET

DATE : 27th January, 2024





# INTER NIT

**DATE : February 2nd to 4th, 2024**





# CULFEST'24

**DATE : February 9th to 11th , 2024**



# OJASS'24

DATE : April 5th to 7th, 2024



# PARTITION REMEMBRANCE DAY

DATE : 14th AUGUST, 2024





# INDEPENDENCE DAY

DATE : 15TH August, 2024





# FOUNDATION DAY

DATE : 15TH August, 2024





## अधिष्ठाता एवम् सह-अधिष्ठाता



## छात्रावास प्रबंधक



## रसायन विभाग



## असैनिक अभियान्त्रिकी विभाग



संगणक विज्ञान एवम् अभियान्त्रिकी विभाग



विद्युत अभियान्त्रिकी विभाग



## इलेक्ट्रॉनिक्स एवम् संचार अभियान्त्रिकी विभाग



## मानविकी, सामाजिक विज्ञान एवम् प्रबंधन विभाग



## गणित विभाग



## यान्त्रिक अभियान्त्रिकी विभाग



धातुकर्म एवम् पदार्थ अभियान्त्रिकी विभाग



भौतिक विज्ञान विभाग



उत्पादन एवम् औद्योगिकी अभियान्त्रिकी विभाग



प्रशिक्षण एवम् नियुक्ति प्रकोष्ठ



# छात्र परिषद



# मंथन समिति

